प्रवेशांक, 2025

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय

उद्यमी मित्र

उद्यमेन हि सिध्यन्ति...

“ हिन्दी हमारे देश और भाषा की प्रभावशाली विरासत है। ”

– माखनलाल चतुर्वेदी

उद्यमी मित्र

उद्यमेन हि सिध्यन्ति...

प्रवेशांक, 2025

भारत सरकार

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय

कर्त्तव्य भवन–3, कर्त्तव्य पथ, नई दिल्ली–110001

© सर्वाधिकार सुरक्षित।

अस्वीकरण:

पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं लेखक के निजी विचार हैं और उनका एमएसएमई मंत्रालय के विचारों से मेल खाना आवश्यक नहीं है। पत्रिका में प्रकाशित आलेख लेखक की अनुमति के बगैर भी अन्यत्र प्रकाशित किए जा सकते हैं,

बशर्ते रचना का श्रेय लेखक को दिया गया हो। आपके सुझाव और आलेख राजभाषा अनुभाग, एमएसएमई मंत्रालय, कर्त्तव्य भवन–03, कर्त्तव्य पथ, नई दिल्ली–110001 के पते अथवा हमारे ई–मेल msmehindi@gmail.com पर आमंत्रित हैं।

मुख्य संरक्षक
माननीय श्री जीतन राम मांझी,
एमएसएमई मंत्री

संरक्षक
माननीया श्रीमती शोभा करांदलाजे,
एमएसएमई राज्य मंत्री

प्रधान संपादक
सुभाष चंद्र लाल दास,
सचिव

संपादक
काजल जैन,
उप–महानिदेशक

सह–संपादक
शैलेश राणा, उप–सचिव
कुमार राधारमण, उप–निदेशक
आलोक कुमार, सहायक निदेशक

प्रकाशन एवं मुद्रण सहयोग
कल्पना सिंह, गरिमा सिंह, उर्वशी सोनू जायसवाल, मोहित सोनी एवं भरत सिंह रावत

ग्राफिक्स सहयोग
मीडिया सेल

विषय–सूची

		पृष्ठ
माननीय मंत्री जी का संदेश		**v**
माननीया राज्य मंत्री जी का संदेश		**vii**
सचिव का संदेश		**ix**
अपर सचिव एवं विकास आयुक्त का संदेश		**xi**
संपादक की कलम से		**xiii**
सम–सामयिकी/मनन/कथा/पर्यटन	**लेखक**	
गांधी और एमएसएमई	अनुज कुमार	1
एमएसएमईः आर्थिक विकास का मार्ग	डॉ. ईशिता गांगुली त्रिपाठी	3
डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जीः औद्योगिक दृष्टिकोण के निर्माता	प्रमोद कुमार	4
भारत के मिसिंग मिड्ल तक पहुंच की डिजिटल कुंजी	अतीश कुमार सिंह	6
खादी और आवश्यकताः एक सिक्के के दो पहलू	अनुराधा चौहान	8
हाथ कागज़ उद्योगः सस्टेनेबिलिटी का उत्कृष्ट उदाहरण	डॉ. साक्षी	9
सोलर तुलसी माला मशीनः अब आजीविका और आसान	डॉ. शशि प्रकाश मिश्रा	10
कर्मयोगी का विकासः भविष्य के लिए सरकारी कर्मियों का रूपांतरण	काजल जैन	12
स्थूल से सूक्ष्म की यात्रा है योग	सुभाष चंद्र लाल दास	15
राष्ट्रीय एकता और हिंदी	सुशील मलिक	17
हिंदी माहः बदलाव की बयार	कल्पना सिंह	18
विकसित भारत का प्रशासन–तंत्र	सुरेन्द्र प्रसाद पंत	20
गुरु और भगवान	उर्वशी	22
त्यागपत्र	प्रीति यादव	23
शहर से गांव की ओर	शैलेश राणा	25
दिल्ली–ऋषिकेशः एक रोमांचक यात्रा	रविन्द्र कुमार	27
मंत्रालय की कुछ स्कीमें		28

		पृष्ठ
काव्य–धारा		
ज़िंदगी	रूपराशि	31
कुछ नज़र नहीं आता	डॉ. शुभ्रांशु शेखर आचार्य	31
मेरा चमकता सितारा	विनम्र मिश्रा	32
वो अनमोल पल...	नीलम शर्मा	33
मैं हूं एमएसएमई	डॉ. संदीप जोशी	34
शब्द	आर. भुवनेश्वरी	35
प्रकृति	अनुराधा कृष्णास्वामी	35
इन्सानियत	अनुपमा परमार	36
आदमी	गरिमा सिंह	36
मेरे बाबूजी, एक कत्तिन	विजय कुमार रात्रे	37
माँ	यतीन्द्र कुमार	38
मदर्स डे	मधु	39
आशा	मुकेश कुमार	39
प्रश्न का उत्तर	राजीव रंजन	40
कोख में	बीनू सिंह	42
पाकीज़ा	माधवी मनोरम	42
हम हैं ऑफिस के सिपाही	दीपक शर्मा	43
पर्यावरण की पुकार	मोहम्मद आरिफ	43
विविध		
शुद्ध–अशुद्ध	आलोक कुमार	47
वर्ग–पहेली–1	कुमार राधारमण	49
पहेलियां	मोहम्मद आरिफ	50

जीतन राम मांझी
JITAN RAM MANJHI

सत्यमेव जयते

मंत्री
सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम
भारत सरकार
Minister of
Micro, Small & Medium Enterprises
Government of India

संदेश

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय द्वारा हिंदी पत्रिका '**उद्यमी मित्र**' के प्रथम अंक के प्रकाशित होने पर मुझे अत्यंत प्रसन्नता और गर्व महसूस हो रहा है।

हिंदी भाषा भारत की पहचान और आत्मा है। यह न केवल संवाद का माध्यम है, बल्कि हमारी संस्कृति, परंपरा और सभ्यता की धरोहर भी है। हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि एक भावना है जो हमें एकता के सूत्र में बाँधती है। यह उत्तर से दक्षिण और पूरब से पश्चिम तक भारत को जोड़ने का कार्य करती है।

इस पत्रिका का प्रकाशन राजभाषा के प्रति मंत्रालय की प्रतिबद्धता को एक मज़बूत आधार देगा। मुझे विश्वास है कि इस पत्रिका के प्रवेशांक में प्रकाशित आलेख आप सभी को पसंद आएंगे, जिनके माध्यम से उनके लेखन कौशल का विकास होगा तथा हिंदी उनके लिए रुचिकर विषय बन सकता है और आगामी अंकों में आप अपना योगदान देना जारी रखेंगे।

मैं इस पत्रिका के प्रकाशन के लिए मंत्रालय के राजभाषा प्रभाग को हार्दिक बधाई देता हूं और पत्रिका की सफलता की कामना करता हूं।

(जीतन राम मांझी)

दिनांक: 28 अक्टूबर, 2025

2nd Floor, Kartavya Bhavan-3, Kartavya Path, New Delhi-110001, Ph. : 011-24011271, 011-24011272
E-mail : min-msme@nic.in

CHAMPIONS
MEDIUM
SMALL
MICRO
अग्रणी
आधुनिक
आत्मनिर्भर

शोभा करांदलाजे
SHOBHA KARANDLAJE

सत्यमेव जयते

राज्य मंत्री
सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम और
श्रम एवं रोजगार
भारत सरकार
Minister of State for
Micro, Small & Medium Enterprises and
Labour & Employment
Government of India

संदेश

मुझे अपार हर्ष है कि एमएसएमई मंत्रालय ने **उद्यमी मित्र** नामक पत्रिका के प्रकाशन का निर्णय लिया है। मंत्रालय द्वारा 'उद्यमी मित्र' के प्रकाशन की यह सराहनीय पहल न केवल हमारी भाषाई और सांस्कृतिक धरोहर को सहेजने का कार्य करेगी, बल्कि हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार, प्रयोग और प्रोत्साहन का भी एक सशक्त माध्यम बनेगी।

मुझे विश्वास है कि रोचक और उपयोगी रचनाओं से भरपूर यह पत्रिका पाठकों को भाएगी और मंत्रालय के कर्मियों की सृजनात्मकता को नए उड़ान प्रदान करेगी।

मैं 'उद्यमी मित्र' से जुड़े सभी सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ और आशा करती हूँ कि यह पत्रिका मंत्रालय परिवार में हिंदी के प्रति प्रेम, गौरव और प्रेरणा का सतत स्रोत बनेगी।

मैं इस उत्कृष्ट पहल के लिए संपादकीय टीम एवं सभी सहयोगियों को हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई देती हूँ।

Shobha Karandlaje

(शोभा करांदलाजे)

कमरा सं. 32074, द्वितीय तल, कर्तव्य भवन–3, जनपथ, नई दिल्ली-110001, टेली. : 011-24011274, 24011275, ई-मेल : mos-msme@gov.in
Room No. 32074, 2nd Floor, Kartavya Bhavan-3, Janpath, New Delhi-110001, Tel. : 011-24011274, 24011275, E-mail : mos-msme@gov.in
कमरा सं. 112, श्रम शक्ति भवन, नई दिल्ली-110001, टेली. : 011-23720013, ई-मेल : mos.shobha@gov.in
Room No. 112, Shram Shakti Bhawan, New Delhi-110001, Tel. : 011-23720013, E-mail : mos.shobha@gov.in

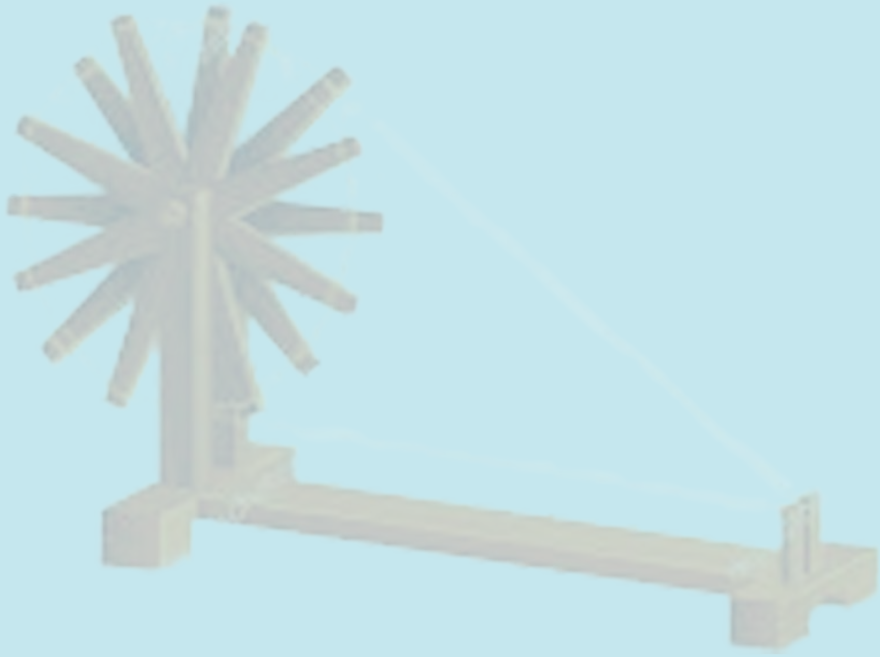

एस. सी. एल. दास, भा.प्र.से.
सचिव
S. C. L. Das, IAS
Secretary

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF MICRO, SMALL AND MEDIUM ENTERPRISES

संदेश

मुझे यह बताते हुए अत्यंत हर्ष और गर्व का अनुभव हो रहा है कि सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय की प्रथम हिंदी गृह पत्रिका 'उद्यमी मित्र' का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका मंत्रालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सृजनात्मकता, अभिव्यक्ति और हिंदी भाषा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का सजीव उदाहरण है।

'उद्यमी मित्र' के प्रथम अंक के माध्यम से मंत्रालय ने एक सराहनीय पहल की है, जो न केवल हमारी भाषाई और सांस्कृतिक धरोहर को सहेजने का कार्य करेगी, बल्कि हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार, प्रयोग और प्रोत्साहन में भी एक सशक्त माध्यम बनेगी।

मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका मंत्रालय परिवार के समस्त सदस्यों के बीच विचारों, अनुभवों और रचनात्मक अभिव्यक्तियों के आदान-प्रदान का एक प्रभावशाली मंच सिद्ध होगी। साथ ही, यह पहल मंत्रालय में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगी।

मैं इस पत्रिका के संपादकीय दल एवं सभी सहयोगियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ कि वे इस प्रयास को निरंतर नई ऊँचाइयों तक पहुँचाएं।

(एस.सी.एल. दास)

Room No. 32104, 2nd Floor, Common Central Secretariat-03, Janpath, New Delhi-110001, Tel. : 011-24011277, 24011278
E-mail: secretary-msme@nic.in, www.champions.gov.in, www.msme.gov.in

पी एम विश्वकर्मा
सम्मान · सामर्थ्य · समृद्धि

डॉ. रजनीश, भा.प्र.से.
अपर सचिव एवं विकास आयुक्त
DR. RAJNEESH, IAS
Additional Secretary & Development Commissioner

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF MICRO, SMALL & MEDIUM ENTERPRISES

संदेश

प्रसन्नता का विषय है कि एमएसएमई मंत्रालय से उद्यमी मित्र पत्रिका का प्रकाशन किया गया है। मुझे हर्ष है कि पत्रिका को इसके प्रवेशांक से ही समावेशी स्वरूप दिया गया है और इसमें विकास आयुक्त कार्यालय सहित मंत्रालय के समस्त अधीनस्थ कार्यालयों के अधिकारियों-कर्मचारियों की सुरुचिपूर्ण रचनाएं शामिल की गई हैं। मुझे विश्वास है, यह पत्रिका अपने विविधरंगी कलेवर के कारण आगे भी आकर्षण का केंद्र बनी रहेगी और राजभाषा हिंदी के प्रति लोगों की रूचि बढाने में उपयोगी सिद्ध होगी। मेरी कामना है कि उद्यमी मित्र सबको जोड़ने का ऐसा साहित्यिक मंच साबित हो जहाँ सृजनशीलता और ज्ञान की धारा अविरल प्रवाहित होती रहे ।

धन्यवाद।

(डॉ. रजनीश)

पी एम विश्वकर्मा
सम्मान · सामर्थ्य · समृद्धि

काजल जैन, आई.एस.एस.
उप महानिदेशक
Kajal Jain, I.S.S.
Deputy Director General

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

भारत सरकार
सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय
कर्तव्य भवन-3, नई दिल्ली-110 001
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF
MICRO, SMALL AND MEDIUM ENTERPRISES
KARTAVYA BHAVAN-3, NEW DELHI-110 001

संपादक की कलम से

"आपका अनुभव, आपकी सोच, आपकी रचना - उद्यमी मित्र"

प्रिय पाठकगण,

यह आपकी-अपनी पत्रिका है।

हिंदी एक सुमधुर एवं समृद्ध भाषा है, जिसमें अभिव्यक्ति की अनंत संभावनाएँ निहित हैं। यह पत्रिका न केवल हमारे चारों ओर मौजूद उन संभावनाओं के लिए एक मंच है, बल्कि हमारे साझा संवाद का, हमारे साझा विचारों-अनुभवों का स्थान भी है। इसके माध्यम से न केवल मंत्रालय के कार्यों, योजनाओं एवं उपलब्धियों का सार्थक प्रस्तुतीकरण संभव होगा, बल्कि हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार, प्रयोग और संवर्धन को भी नई दिशा मिलेगी।

मैं, समस्त सहयोगियों का हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने 'उद्यमी मित्र' के प्रथम अंक के प्रकाशन में अपना अमूल्य योगदान दिया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका मंत्रालय के सभी कार्मिकों में हिंदी के प्रति उत्साह और गौरव की भावना को और प्रबल करेगी, तथा हमारे सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए एक सशक्त मंच सिद्ध होगी, जहाँ वे हिंदी के माध्यम से अपने विचार, अनुभव एवं रचनात्मक अभिव्यक्तियों को साझा कर सकेंगे।

आशा है कि इस पत्रिका को आप सब उत्साहपूर्वक स्वीकार करेंगे तथा इसे रुचि पूर्वक पढ़ेंगे। इसे उत्तम बनाने में आपका सुझाव हमारी शक्ति का स्रोत होगा, जिसे हम पूर्ण हृदय से आमंत्रित करते हैं। प्रथम अंक में सीमित स्थान के कारण सभी भेजी गई रचनाएँ शामिल नहीं हो सकीं, परंतु शेष रचनाओं को आगामी अंकों में स्थान देने का हमारा प्रयास रहेगा।

अंत में, मैं इस पत्रिका के प्रवेशांक के प्रकाशन कार्य को कड़ी मेहनत एवं लगन से सम्पन्न कराने हेतु राजभाषा प्रभाग को विशेष धन्यवाद एवं शुभकामनाएं देना चाहूंगी।

(हस्ताक्षर)

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय
भारत सरकार

सम-सामयिकी

मनन

कथा

पर्यटन

“भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि आप आज क्या करते हैं।”

–महात्मा गांधी

गांधी दर्शन

गांधी और एमएसएमई

— अनुज कुमार

वकालत के लिए गांधी जी 1888 में लंदन गये थे जहां से वे 1915 को भारत लौटे। यहां गांधी जी ने पाया कि अंग्रेज भारतीयों पर अत्याचार कर रहे थे। गांधी जी ने देखा कि विदेशी वस्तुएं भारत में बहुत महंगे दामों पर बिकती थीं और भारतीय धन विदेश चला जाता था। भारत के लघु एवं कुटीर उद्योगों को इस कारण बहुत नुकसान का सामना करना पड़ रहा था। विदेशी वस्तुओं की एक बाढ़ सी आ गई थी जिस कारण भारतीय लोगों के लिए रोजगार की कमी होने लगी। भारतीयों को रोजगार कैसे मिले, इसके लिए स्वदेशी को अपनाने का व्रत गांधी जी ने लिया और चरखे को स्वदेशी का पहला हथियार बनाया। गांधी जी ने घरेलू कपास आंदोलन का सफलतापूर्वक नेतृत्व किया और अपने समर्थकों से ब्रिटेन में बने कपड़ों के प्रयोग के स्थान पर स्वयं कपास कातने और उससे बने कपड़ों का प्रयोग करने का आग्रह किया। वे स्वयं भी जीवन भर घर पर बने साधारण खादी के कपड़े पहनते रहे।

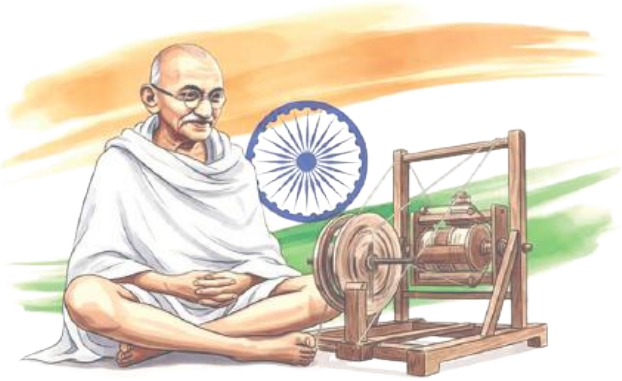

गांधी जी ने स्वेदशी को अपनाकर गांवों और राष्ट्र को उन्नत बनाने पर बल दिया। वे कहते थे कि शहरों में ग्रामीणों का शोषण बंद होना चाहिए और जिस प्रकार देशी उद्योगों को विदेशी निर्माताओं से संरक्षित किया जाता है, उसी तरह कुटीर उद्योगों में हस्तनिर्मित वस्तुओं को भी मशीनी वस्तुओं से संरक्षित किया जाना चाहिए। अपनी पुस्तक *हिंद स्वराज* में उन्होंने स्वदेशी विचार को अच्छे से परिभाषित किया है। अंग्रेज़ी हुकूमत गरीब भारतीयों का शोषण कर अपना खजाना भर रही थी, इसे देखते हुए गांधी जी ने स्वदेशी का नारा देकर ब्रिटिश राज के शोषण को समाप्त करने का प्रयत्न किया। उन दिनों औद्योगीकरण पर आधारित पूँजीवाद खुले बाजार का आदर्श रूप माना जाने लगा था, लेकिन गांधी जी ने स्वदेशी और कुटीर उद्योग के विचार को दृढ़ता के साथ सामने रखा। ऐसा नहीं कि गांधी जी का स्वदेशी मॉडल टेक्नोलॉजी के खिलाफ हो। हां, वे पश्चिम से बेलगाम आयात के विरूद्ध अवश्य थे। इसलिए उन्होंने कहा कि हमें आधुनिकीकरण तो चाहिए, लेकिन पश्चिमीकरण नहीं। गांधी जी अर्थशास्त्री नहीं थे और न ही उन्होंने कोई आर्थिक मॉडल दिया, फिर भी उन्होंने भारत की आत्मनिर्भरता का स्वप्न देखा था।

गांधी जी मानते थे कि भारत की आत्मा गांवों में बसती है और भारत के विकास के लिए गांवों का विकास ज़रूरी है। उन्होंने बड़े–बड़े उद्योगों के स्थान पर छोटे (कुटीर) उद्योगों को महत्त्व दिया। उनका मानना था कि हर व्यक्ति स्वयं में उद्यमी बने, हर व्यक्ति अपना काम करते हुए कुछ न कुछ उत्पादन करे और ऐसा करने से कोई भी बेरोजगार नहीं रहेगा, जिससे देश का विकास होगा। उन्होंने जहां ग्राम्य विकास के लिए लघु एवं कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देने पर बल दिया, वहीं दूसरी ओर स्वदेशी का आह्वान कर राष्ट्रवादी भावना

प्रस्तुत की। ग्रामीण आत्मनिर्भरता के लिए गांधी जी मशीनों की अपेक्षा श्रम के इस्तेमाल में विश्वास करते थे। गांधी जी ने लघु और कुटीर उद्योगों के ज्ञान को शिक्षा के साथ जोड़ने पर बल दिया। गौरतलब है कि लघु उद्योगों के अधिकांश श्रमिक पारंपरिक कारीगर हैं, जिन्हें कला के रूप में अपना काम करने का गुण उनके अपने पूर्वजों से विरासत में मिला है। कुटीर उद्योग के मामले में, हस्तशिल्प, कारीगरी और बढ़ईगिरी आदि जैसी कला पीढ़ी–दर–पीढ़ी ही हस्तांतरित हुई है।

एमएसएमई का मतलब है– सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम यानी छोटे और मध्यम स्तर के व्यवसाय। एमएसएमई का प्रबंधन सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय द्वारा किया जाता है। यह क्षेत्र भारत के सामाजिक–आर्थिक विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देता है। यही वजह है कि इसे भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ भी कहा जाता है। यह क्षेत्र न सिर्फ रोज़गार के अवसर पैदा करता है, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों के विकास में भी इसकी अहम भूमिका है। गांधी के सपनों और विचारों के भारत का निर्माण करने के लिए 1961 में लघु उद्योग मंत्रालय तथा कृषि और ग्रामीण उद्योग मंत्रालय को मिलाकर सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय का गठन किया गया था। एमएसएमई में घरेलू और अंतरराष्ट्रीय बाजारों के लिए कई तरह के उत्पाद तैयार होते हैं। यह क्षेत्र अन्य मंत्रालयों, राज्य सरकारों और संबंधित पक्षों की मदद से खादी, ग्राम और कयर उद्योगों के विकास में भी मदद करता है।

एमएसएमई मंत्रालय कारीगरों और श्रमिकों को बैंकों से ऋण या आर्थिक सहायता प्रदान करने, विशेष प्रशिक्षण केंद्रों के ज़रिए नए व्यवसाय को बढ़ावा देने, कौशल संवर्धन, तकनीकी पहुँच बढ़ाने, अवसंरचना विकास और आधुनिकता को प्रोत्साहित करने, घरेलू और निर्यात बाजार तक आसान पहुंच के लिए सहायता प्रदान करने, आधुनिक परीक्षण सुविधा और गुणवत्ता प्रमाण–पत्र प्रदान करने तथा पैकेजिंग, उत्पाद विकास और डिजाइन इंटरवेन्शन को बढ़ावा देने आदि की दिशा में कार्यरत है।

एमएसएमई मंत्रालय ने कुटीर और लघु उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए कई स्कीम शुरू की हैं, जैसे– नवाचार, ग्रामीण उद्योग और उद्यमिता संवर्धन स्कीम (एस्पायर), परंपरागत उद्योगों के पुनर्सृजन के लिए निधि स्कीम (स्फूर्ति), प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम, एमएसएमई कार्य–निष्पादन का उत्थान और गतिवर्धन (रैम्प), पीएम विश्वकर्मा स्कीम, विज्ञान और प्रौद्योगिकी स्कीम, निर्यात बाजार संवर्धन, कयर विकास योजना, कौशल उन्नयन और महिला कयर योजना, उद्यमिता कौशल विकास कार्यक्रम तथा सूक्ष्म और लघु उद्यमों के लिए क्रेडिट गारंटी ट्रस्ट फंड स्कीम आदि।

एमएसएमई उद्योग में अपार संभावनाएं हैं, जैसे– भारतीय उत्पादों के लिए निर्यात को बढ़ावा देना, सरकार की तरफ से नए व्यवसाय को बढ़ावा देने हेतु सहायता, घरेलू बाजार में मांग में वृद्धि होना, कम पूंजी की ज़रूरत होना, जनशक्ति को प्रशिक्षण देना, कच्चे माल और मशीनरी की खरीद को बढ़ावा, उपकरण और परीक्षण सहायता आदि।

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम विकास अधिनियम, 2006 के तहत भारत सरकार ने एमएसएमई के विकास को प्रभावित करने वाले कारकों की जांच के लिए सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम के लिए राष्ट्रीय बोर्ड की स्थापना की। यह बोर्ड एमएसएमई क्षेत्र के विकास के लिए मौजूदा नीतियों की समीक्षा करता है, यानी पता लगाता है कि योजना में क्या कमी है और कहां सुधार की ज़रूरत है और सरकार को सुझाव देता है।

उपर्युक्त प्रयासों को देखते हुए इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि एमएसएमई क्षेत्र गांधी जी के सपनों और विचारों को साकार कर मानव कल्याण की दिशा में पूरी ऊर्जा, शक्ति और दृढ़ सकंल्प के साथ प्रयासरत है।

(लेखक एमएसएमई मंत्रालय के पूर्व वैयक्तिक सहायक हैं)

आत्मनिर्भरता का सोपान

एमएसएमई: आर्थिक विकास का मार्ग

– डॉ. ईशिता गांगुली त्रिपाठी[1]

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) को अक्सर भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ कहा जाता है। वास्तव में, वे दुनिया भर में आर्थिक विकास का मुख्य आधार हैं। संयुक्त राष्ट्र के अनुमान बताते हैं कि दुनिया भर में एमएसएमई का योगदान कारोबार में 90%, रोज़गार में 60–70% तथा सकल घरेलू उत्पाद में 50% है[2]।

इस संदर्भ में, यह स्वीकार करना महत्त्वपूर्ण है कि दुनिया भर में अपनाई जाने वाली परिभाषा एक समान नहीं है। जहां कुछ देश परिसंपत्ति–आधारित परिभाषा का पालन करते हैं, वहीं कुछ अन्य देशों में एमएसएमई को उनके रोज़गार के संदर्भ में वर्णित किया जाता है। भारत उन कुछ देशों में से एक है, जिसने इस क्षेत्र के लिए दोहरे मानदंड अपनाए हैं। वर्ष 2020 में भारत ने दोहरे मानदंडों पर आधारित परिभाषा अपनाई। तब से, आर्थिक वास्तविकताओं में काफी बदलाव आया है। इसे देखते हुए कई हितधारकों की लगातार मांग थी कि निवेश और टर्नओवर की अधिकतम सीमा बढ़ाने की आवश्यकता है, ताकि उद्यम एमएसएमई से संबंधित अधिकारों को खोने की किसी भी आशंका के बिना बढ़ सकें। तदनुसार, बजट घोषणा–2025 के अनुसार टर्नओवर की सीमा दोगुनी कर दी गई और निवेश पर मौजूदा सीमा का 2.5 गुना कर दिया गया। संशोधन दिनांक 1.4.2025 से प्रभावी हो गया है। कुछ ऐसे उद्यम हैं जो पहले एमएसएमई थे और अब अपने निवेश या टर्नओवर में वृद्धि के कारण इस क्षेत्र के दायरे से बाहर हो गए हैं क्योंकि निवेश और टर्नओवर की सीमा क्रमशः 50 करोड़ रुपये से बढ़ाकर 125 करोड़ रुपये और 250 करोड़ रुपये से बढ़ाकर 500 करोड़ रुपये कर दी गई है। वहीं कुछ ऐसे भी हैं जो पहले बड़े उद्यम थे, लेकिन अब एमएसएमई के दायरे में हैं। दिनांक 12.6.2025 तक, 6.47 करोड़ से अधिक पंजीकृत एमएसएमई हैं, जिनमें 27.89 करोड़ लोगों को रोजगार मिला हुआ है। परिभाषा के उद्देश्य से सीमाओं के संशोधन के बाद से औसतन प्रतिदिन लगभग 25,000 उद्यम पंजीकृत हुए हैं।

सेक्टर को परिभाषित करने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले मानदंडों के अलावा, विभिन्न देशों में एक और अंतर सूक्ष्म उद्यमों का समावेश है। अधिकांश देशों में एसएमई सेक्टर में केवल छोटे और मध्यम उद्यम हैं, जबकि भारत में 3.75 करोड़ उद्यमों वाला अनौपचारिक सूक्ष्म उद्यम भी एमएसएमई में शामिल है, जिसे उद्यम असिस्ट प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से औपचारिक रूप दिया गया है जो प्राथमिकता क्षेत्रक ऋण तथा एमएसएमई मंत्रालय की खरीद और विपणन सहायता योजना के तहत सूक्ष्म उद्यमों को मिलने वाले लाभों के लिए पात्र है। वर्तमान में, ऐसे 2.71 करोड़ उद्यम हैं और कुल मिलाकर, 6.41 करोड़ सूक्ष्म उद्यम पंजीकृत हैं।

एमएसएमई मिलकर भारत के सकल घरेलू उत्पाद में स्थिर मूल्यों पर लगभग एक–तिहाई और देश के निर्यात में 45% से अधिक का योगदान करते हैं। उनके उत्पादों और सेवाओं की रेंज बहुत बड़ी है, जिसमें खुदरा व्यापार से लेकर कंप्यूटर की मरम्मत, खाद्य और पेय सेवाओं से लेकर ज़मीनी परिवहन, परिधान निर्माण से लेकर फर्नीचर निर्माण आदि शामिल हैं। उनका भौगोलिक विस्तार बहुत बड़ा है। किफायती वित्त, अत्याधुनिक तकनीक और विस्तृत घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों तक पहुँच सुनिश्चित करने के लिए भारत सरकार के हाल के हस्तक्षेपों की बदौलत, निस्संदेह, एमएसएमई 'विकसित भारत' के वास्तुकार बनने जा रहे हैं।

(लेखिका पूर्व अपर विकास आयुक्त हैं)

[1]3.6.2025 तक वे अवर विकास आयुक्त (एमएसएमई) थी। अब, वे रक्षा मंत्रालय में संयुक्त सचिव और अवर वित्तीय सलाहकार है।
[2]https://www.un.org/en/observances/micro-small-medium-businesses-day (4.4.2025 को एक्सेस किया गया)

125वीं जयंती पर विशेष

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी: औद्योगिक दृष्टिकोण के निर्माता

— प्रमोद कुमार

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का जन्म 6 जुलाई, 1901 को कलकत्ता (अब कोलकाता) में एक प्रतिष्ठित बंगाली परिवार में हुआ था। उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से कानून की पढ़ाई की और 1926 में लंदन चले गए, जहाँ वे पहले बैरिस्टरों और जजों के संगठन लिंकन्स इन में और फिर 1927 में इंग्लिश बार में शामिल हो गए।

युवावस्था में, डॉ. मुखर्जी पर महात्मा गांधी के नेतृत्व वाले स्वतंत्रता आंदोलन का गहरा प्रभाव पड़ा और 1920 के दशक में वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की युवा शाखा के सक्रिय सदस्य बन गए। बाद में, उन्होंने 1943 से 1946 तक अखिल भारतीय हिंदू महासभा के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया और पश्चिम बंगाल से संविधान सभा के लिए चुने गए, जहाँ उन्होंने अल्पसंख्यक अधिकारों, क्षेत्रीय भाषाओं और राष्ट्रीय एकता पर बहस में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

भारतीय जनसंघ के संस्थापक डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने भारत के प्रथम उद्योग और आपूर्ति मंत्री (1947–1950) के रूप में अपना सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। वे सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) को आर्थिक विकास का सच्चा वाहक मानने वाले पहले व्यक्ति थे। उन्होंने कहा कि एमएसएमई रोज़गार सृजन, आयात में कमी लाने और आत्मनिर्भरता के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। डॉ. मुखर्जी ने ही भारत की औद्योगिक नीति की प्रारंभिक नींव रखी थी। वे छोटे क्षेत्रों को सहयोग प्रदान किए जाने के पक्ष में थे ताकि बड़ी परियोजनाओं के साथ संतुलन स्थापित हो सके। उनके दृष्टिकोण (जिसमें तमिलनाडु में हस्तनिर्मित माचिस निर्माताओं जैसे छोटे उद्योगों को कर में राहत और कच्चा माल उपलब्ध कराना शामिल था) ने 1948 के ऐतिहासिक औद्योगिक नीति प्रस्ताव को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। एक ऐसे समय में, जब वैश्विक आर्थिक विचारधारा बड़े पैमाने पर केंद्रीकृत औद्योगीकरण के पक्ष में थी, मुखर्जी ने दोहरी कार्यनीति का समर्थन किया:

1. **बड़े उद्योग:** व्यापकता और बुनियादी ढांचे के लिए आवश्यक (जैसे नेशनल न्यूजप्रिंट एंड पेपर मिल्स लिमिटेड)।
2. **लघु उद्योग (एसएमई):** रोजगार, समान धन–वितरण और आत्मनिर्भरता के लिए आवश्यक।

उनका दर्शन आर्थिक राष्ट्रवाद में निहित था। उनका स्पष्ट मानना था कि भारत को वास्तविक अर्थों में विकास करने के लिए अपने लोगों को सशक्त बनाना होगा और विदेशी पूंजी और वस्तुओं पर निर्भरता कम करनी होगी। आज के भारत में, जहाँ एमएसएमई (सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम) सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 30% का योगदान करते हैं और अर्थव्यवस्था की रीढ़ माने जाते हैं, मुखर्जी के विचार कार्यरूप लेते दिख रहे हैं।

मुखर्जी का औद्योगिक खाका, जिसकी 1948 के औद्योगिक नीति प्रस्ताव पर गहरी छाप थी, आज भी संतुलित और समावेशी विकास के लिए एक मॉडल बना हुआ है। ख़ासकर, उनके ये तीन सिद्धांत अत्यधिक प्रासंगिक हैं:–

सिद्धांत	डॉ. मुखर्जी का लक्ष्य	आधुनिक प्रासंगिकता (एमएसएमई)
विकेंद्रीकृत औद्योगीकरण	ग्रामीण और अर्ध–शहरी क्षेत्रों में उद्योगों को प्रोत्साहित करना ताकि शहरों में उद्योगों का केंद्रीकरण रुके और क्षेत्रीय संतुलन सुनिश्चित हो।	टियर–1 शहरों के बाहर विकास को बढ़ावा देना तथा सशक्त स्थानीय आपूर्ति श्रृंखला का निर्माण जो वैश्विक झटकों को झेल सके।
कौशल–आधारित रोजगार	कारीगरी, शिल्प और पारंपरिक कौशल के क्षेत्र में भारत के सुदीर्घ अनुभव का लाभ उठाकर विशिष्ट, विस्तार योग्य लघु उद्योग सृजित करना।	आधुनिक 'कुशल भारत' ढांचे का निर्माण करना तथा श्रमोन्मुख (गिग) अर्थव्यवस्था और अत्यंत उत्कृष्ट विनिर्माण का उपयोग करना।
ऋण और कच्चे माल तक पहुंच	कर राहत, कच्चा माल और आसान वित्तीय पहुंच प्रदान करना (जैसे– तमिलनाडु के, हाथ से माचिस बनाने वालों को)।	भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (सिडबी और खादी और ग्रामोद्योग आयोग (केवीआईसी) जैसी आधुनिक संस्थाएँ, सहकारी मॉडल। स्टार्टअप्स और छोटे व्यवसायों के लिए सरलीकृत ऋण/अनुपालन।

कोविड के बाद की दुनिया में, सरकार वर्तमान राष्ट्रीय रणनीतियों की नींव के तौर पर आत्मनिर्भर भारत और मेक इन इंडिया पर ज़ोर दे रही है:

- **आत्मनिर्भर भारतः** इसके तहत समकालीन आंदोलन स्थानीय विनिर्माण और आपूर्ति श्रृंखलाओं को मज़बूत करने पर ज़ोर दिया जा रहा है।
- **एमएसएमई आधारशिला के रूप में:** आज इन्हें रोज़गार के वाहक और सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में एक प्रमुख योगदानकर्ता (लगभग 30%) माना जाता है।
- **समावेशी विकासः** गांवों और शहरों में उद्योगों को बढ़ावा देकर, डॉ. मुखर्जी ने भौगोलिक रूप से हर क्षेत्र की समृद्धि को महत्त्व दिया, जो स्थायी, समावेशी राष्ट्रीय विकास प्राप्त करने का एक महत्त्वपूर्ण घटक है।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी राजनीतिक व्यक्ति से कहीं बढ़कर थे; वे एक औद्योगिक दूरदृष्टा थे, जिन्होंने समझ लिया था कि पिछड़े क्षेत्रों के विकास से ही राष्ट्रीय शक्ति का निर्माण होगा। उनकी दूरदर्शिता हमें यह मूल्यवान सीख देती है कि कोई भी विकासशील अर्थव्यवस्था स्थानीय उद्यमिता की मूलभूत शक्ति के साथ कैसे अपनी विशाल महत्वाकांक्षाओं को संतुलित कर सकती है।

23 जून, 1953 को डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के निधन के कारण उनकी यह दृष्टि और अधिक विस्तार नहीं पा सकी। फिर भी, उन्होंने भारत के राष्ट्रीय विकास के लिए दूरदर्शिता और प्रतिबद्धता की विरासत छोड़ी है। डॉ. मुखर्जी एक औद्योगिक विचारक और राष्ट्र–निर्माता थे, जिनका लघु और मध्यम उद्योगों पर ज़ोर व्यावहारिक भी था और दूरदर्शितापूर्ण भी। एक आत्मनिर्भर, समावेशी और विकेन्द्रीकृत अर्थव्यवस्था के निर्माण में लघु और मध्यम उद्यमों की भूमिका को समझने की दृष्टि से उनकी दूरदर्शिता अत्यंत प्रासंगिक है। जैसे–जैसे भारत 21वीं सदी में अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत कर रहा है, मुखर्जी के औद्योगिक दृष्टिकोण को याद रखना और उसे लागू करना सतत् वृद्धि और व्यापक खुशहाली के लिए एक संतुलित मार्ग प्रदान कर सकता है।

(लेखक एमएसएमई मंत्रालय में अवर सचिव हैं)

तकनीक

भारत के मिसिंग मिड्ल तक पहुंच की डिजिटल कुंजी

– अतीश कुमार सिंह

भारत की अर्थव्यवस्था में बड़ी संरचनात्मक कमी है। देश के कुल 6.86 करोड़ एमएसएमई में से आश्चर्यजनक रूप में 99% सूक्ष्म उद्यम हैं, जबकि केवल 0.8% ही लघु और मात्र 0.01% मध्यम श्रेणी में आते हैं। यह "मिसिंग मिड्ल" सिर्फ एक सांख्यिकीय तथ्य नहीं है, बल्कि यह भारत के आर्थिक परिवर्तन में एक बड़ी बाधा है। डिजिटल विभाजन इस चुनौती के मूल में है।

डिजिटल अंगीकरण: विकास की बाधा

भारत के लगभग 12% एमएसएमई ही केवल डिजिटल तौर पर सक्षम हैं। यह तकनीकी अंतर सतही नहीं, बल्कि एमएसएमई के विस्तार में आने वाली सबसे मूलभूत बाधाओं में से एक है।

ज़्यादातर सूक्ष्म उद्यम पूरी तरह से ऑफ़लाइन काम करते हैं– नोटबुक में इन्वेंट्री ट्रैक करना, बिना सॉफ़्टवेयर के वित्तीय प्रबंधन करना, और सिर्फ़ भौतिक चैनलों के ज़रिए बिक्री करना। ये एनालॉग तरीके अदृश्य विकास सीमाएँ उत्पन्न करते हैं। एक पारिवारिक स्टोर कागज़ के बही–खातों और पाँच कर्मचारियों के साथ चल सकता है, लेकिन ये प्रणालियाँ 25 कर्मचारियों या कई स्थानों की जटिलता के आगे ढह जाती हैं।

उत्पादकता के आँकड़े बताते हैं कि बड़ी भारतीय फ़र्में (जो आमतौर पर डिजिटल होती हैं) सूक्ष्म उद्यमों की तुलना में 4–5 गुना ज़्यादा उत्पादक हैं। डिजिटल उपकरण सिर्फ़ दक्षता के बारे में नहीं हैं– वे एक निश्चित आकार से आगे बढ़ने के लिए पूर्वापेक्षा भी हैं।

विस्तार की बाधाओं हेतु डिजिटल समाधान

औद्योगिक क्रांति भारत के सूक्ष्म उद्यमों को उनकी पारंपरिक चुनौतियों से बाहर निकलने का सही अवसर प्रदान करती है:

- **वित्तीय पहुँच:** डिजिटल फुटप्रिंट एमएसएमई ऋण प्रदान करने की प्रक्रिया को बदल रहे हैं। बैंक विवरण, जीएसटी रिटर्न और भुगतान इतिहास वैकल्पिक ऋण मूल्यांकन मॉडल निर्मित करते हैं, जिससे पूँजी का प्रवाह संपार्श्विक के बजाय व्यावसायिक प्रदर्शन के आधार पर होता है। फिनटेक नवाचार जैसे ऋण आधारित वित्तीयन पारंपरिक ऋणों की तुलना में छोटे व्यवसायों की वास्तविकताओं के साथ बेहतर मेल खाते हैं।
- **बाज़ार पहुँच:** ई–कॉमर्स प्लेटफ़ॉर्म भौगोलिक सीमाओं को तोड़ते हैं, जिससे छोटे उत्पादक भी राष्ट्रीय या वैश्विक स्तर पर बिक्री कर सकते हैं। बी2बी मार्केटप्लेस छोटे आपूर्तिकर्ताओं को सीधे तौर पर बड़े कॉरपोरेट खरीदारों से जोड़ते हैं, जिससे वे उन जटिल मध्यस्थों से बच जाते हैं, जिसे पहले बाजार तक पहुंच के लिए बड़े पैमाने पर काम करना जरूरी बनाया गया था।
- **नियामक अनुपालन:** डिजिटल इंटरफ़ेस विभिन्न कर्मचारी सीमा पर शुरू होने वाली कठिन कागजी कार्रवाई को सरल बनाते हैं। सॉफ़्टवेयर श्रम अनुपालन, कर दाखिल करने और नियामक रिपोर्टिंग को स्वचालित कर

सकता है– जिससे 10, 20 या 100 कर्मचारियों की सीमा पार करना कम चुनौतीपूर्ण हो जाता है।

- **प्रबंधन क्षमता:** क्लाउड–आधारित ईआरपी सिस्टम अब सूक्ष्म उद्यमों की जरूरतों के अनुरूप भी उपलब्ध हैं, जो डैशबोर्ड और निर्णय लेने के उपकरण प्रदान करते हैं जो पहले केवल बड़े कंपनियों के लिए ही उपलब्ध थे। ये प्रणाली संस्थापकों की प्रबंधन क्षमता को बढ़ाती है, जिससे तुरंत पेशेवर प्रबंधकों को नियुक्त करने की आवश्यकता कम हो जाती है– जो विकास के क्षेत्र में एक प्रमुख सांस्कृतिक बाधा है।

डिजिटल प्रगति की ओर

महामारी ने डिजिटल तकनीकों को अपनाने की गति को बढ़ाया है, जिससे कई छोटे व्यवसायों ने व्हाट्सऐप के जरिए ऑर्डर लेना, डिजिटल भुगतान और बेसिक ऑनलाइन उपस्थिति जैसे साधारण तरीकों को अपनाया, किन्तु व्यापक डिजिटीकरण अब भी अपवाद ही बना हुआ है।

भारत के मिसिंग मिड्ल के लिए एक केंद्रित डिजिटल कार्यनीति कैसी दिखनी चाहिए?

1. क्षेत्र–विशिष्ट डिजिटल स्टार्टर किट जिनमें आवश्यक सॉफ़्टवेयर टूल्स के साथ उनके इस्तेमाल हेतु मार्गदर्शन भी शामिल हो।
2. विश्वसनीय स्थानीय चैनलों के माध्यम से पारंपरिक व्यवसायों को लक्षित करने वाले डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम।
3. सुव्यवस्थित कैटलॉगिंग, पूर्ति और ग्राहक सेवा सहायता के साथ ई–कॉमर्स ऑन–बोर्डिंग पहल।
4. छोटे व्यवसायों के लिए अंतर–संचालनीय डिजिटल पारितंत्र बनाने हेतु ओपन एपीआई और एकीकरण मानक।
5. डिजिटल अनुपालन प्लेटफ़ॉर्म जो व्यवसायों के बढ़ने के साथ नियामक आवश्यकताओं को सरल बनाते हैं।

भारत की डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना (यूपीआई, आधार, अकाउंट एग्रीगेटर) ऐसे लाभ प्रदान करती है जो अन्य विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में नहीं हैं। इन प्रणालियों का उपयोग सूक्ष्म उद्यमों के लिए औपचारिकता, सेवाओं तक पहुँच और विस्तार के निर्बाध मार्ग बनाने के लिए किया जा सकता है।

भारत में उद्यमों (फर्म) के आकार वितरण को बदलने की तकनीक मौजूद है। अब ज़रूरत इस बात की है कि इन डिजिटल उपकरणों को करोड़ों सूक्ष्म उद्यमियों तक पहुँचाया जाए और उन्हें डिजिटल परिवर्तन की यात्रा में उचित सहायता दी जाए। तकनीकी कमी को दूर करके हम "मिसिंग मिड्ल" को भरना शुरू कर सकते हैं– और एक ऐसी अर्थव्यवस्था का निर्माण कर सकते हैं, जिसमें अधिक संतुलित, उत्पादक और रोज़गार पैदा करने वाली व्यावसायिक संरचना हो।

(लेखक एमएसएमई मंत्रालय में संयुक्त सचिव हैं)

स्वदेशी से आत्मनिर्भरता

खादी और आवश्यकता : एक सिक्के के दो पहलू

– अनुराधा चौहान

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान आजादी का सूत्र बना खादी अब नए दौर में फैशन की एक नई पहचान बनता जा रहा है। विदेशी कपड़ों का बहिष्कार करने की महात्मा गांधी की घोषणा के बाद स्वदेशी आंदोलन के दौरान खादी घर– घर पहुंचा। आरामदेह होने के कारण अब यह अपने अलग अंदाज में युवाओं के बीच काफी लोकप्रिय होता जा रहा है। खादी अब एक ट्रेंड है और फायदे का सौदा भी। "ऑर्गेनिक फैशन मूवमेंट" से खादी को काफी लोकप्रियता मिली और अब यह जॉर्जेट, शिफॉन और नेट के कपड़े का एक अच्छा विकल्प बनता जा रहा है।

आपदा को अवसर में बदलते हुए अब खादी ने भी ई–मार्केट मंच तैयार कर लिया है जिस पर 'गो वोकल फॉर लोकल' थीम को बढ़ावा दिया जा रहा है। "उत्सव या त्योहार, खादी से अच्छा क्या उपहार?" यह नारा अब एक संकल्प जैसा दिखने लगा है। स्थानीय उत्पादों की ललक भारत में अब एक नया ट्रेंड है। एक दौर था जब खादी को राजनेताओं तक सीमित माना जाता था। आजादी के आंदोलन के वक्त यह अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ सबसे बड़ा अस्त्र बन गया था। बदलते वक्त के साथ खादी सिमट–सा गया था। लेकिन अब त्योहारों के मौकों पर खादी के प्रति एक अलग प्रेम और उत्साह दिख रहा है। आंकड़ों की मानें, तो गांधी जयंती के मौके पर दिल्ली के कनॉट प्लेस स्थित खादी भंडार में कोरोना काल में भी सिर्फ एक दिन में 1 करोड़ से ज्यादा की बिक्री हुई। वर्ष 2014–15 से 2025–26 के बीच खादी के उत्पादन और बिक्री में रिकार्डतोड़ वृद्धि हुई है।

जब हम खादी की वस्तुएं खरीदते हैं, तो निश्चित तौर से इससे जुड़े ग्रामीण लोगों को आजीविका का बड़ा साधन मिलता है। किसी भी क्षेत्र पर जब शासन में शीर्ष स्तर से ध्यान दिया जाता है, तो उसका कायाकल्प कैसे होता है, इसकी झलक खादी में दिखती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने जब 3 अक्टूबर, 2014 को अपने पहले 'मन की बात' कार्यक्रम में खादी को लेकर अपील की थी, तब खादी के इस बदलाव का अहसास शायद ही किसी के जेहन में रहा होगा। तब प्रधानमंत्री ने कहा था, ''हम जब महात्मा गांधी की बात करते हैं, तो खादी की बात बहुत स्वाभाविक रूप से ध्यान में आती है। अगर आप खादी का वस्त्र खरीदते हैं, तो एक गरीब के घर में दिवाली का दीया जलता है। कोशिश करें कि आपके घर में कम से कम एक चीज खादी की जरूर हो। यह एक छोटी चीज है, लेकिन आग्रहपूर्वक इसको करिए और देखिए गरीब के साथ आपका कैसे जुड़ाव का अहसास होता है।''

खादी उत्पादन ग्रामीण विकास को बढ़ावा दे सकता है और बेरोजगारी को कम कर सकता है। खादी का उत्पादन गरीब और कमजोर लोगों को रोजगार प्रदान कर सकता है। खादी का उत्पादन पर्यावरण के अनुकूल है। खादी एक बहुमुखी कपड़ा है जो राष्ट्र और फैशन– दोनों के लिए महत्त्वपूर्ण है। खादी का उपयोग आर्थिक विकास, सामाजिक न्याय और पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए भी किया जा सकता है।

(लेखिका खादी और ग्रामोद्योग आयोग, अंबाला कैंट में सहायक हैं)

श्रमेव जयते

हाथ काग़ज़ उद्योग–सस्टेनेबिलिटी का उत्कृष्ट उदाहरण

– डॉ. साक्षी

"काग़ज़" शब्द की उत्पत्ति प्राचीन यूनानी शब्द "पपाइरस" से हुई है। 3700 ईसा पूर्व में पपाइरस पौधे का पहली बार लेखन सतह के रूप में उपयोग किया गया। पपाइरस के पौधे की छाल पर संदेश लिखे जाते थे और एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति और एक स्थान से दूसरे स्थान पर संदेश पहुँचाने के लिए उपयोग किया जाता था। काग़ज़ सर्वप्रथम बिना किसी मशीन के और हाथ से, रेशों की घुटाई करके छपरी द्वारा बनाया गया था, इसलिए इसे "हाथ काग़ज़' कहा गया।

भारत के अलावा, हस्तनिर्मित काग़ज़ की पारंपरिक कला फिलीपींस, नेपाल, चीन आदि सहित विभिन्न देशों में संरक्षित है। चीन के बाद हस्तनिर्मित काग़ज़ बनाने की कला में भारत प्रमुख है। 1990 के दशक में काग़ज़ की मांग बढ़ने लगी और भारत में काग़ज़ मिलों द्वारा बनाये गये काग़ज़ के सामने हस्तनिर्मित काग़ज़ पीछे रह गया। काग़ज़ उद्योग समय के साथ अधिक स्वचालित होता गया और काग़ज़ मशीनों की गति 1800 मीटर प्रति मिनट तक पहुंच गयी, जिससे 5 से 10 मीटर तक की वेब चौड़ाई वाले काग़ज़ का प्रति दिन 4500 टन तक उत्पादन होने लगा। किसी भी देश की काग़ज़ की प्रति व्यक्ति खपत साक्षरता दर, बाजार, पैकेजिंग पेपर की मांग और समग्र आर्थिक विकास पर निर्भर करती है।

भारत में काग़ज़ की प्रति व्यक्ति खपत 15–16 किलोग्राम है जो विश्व की औसत काग़ज़ खपत दर यानी 57 किलोग्राम प्रति व्यक्ति से काफी कम है। इससे पता चलता है कि भारतीय काग़ज़ उद्योग के निर्यात की संभावनाएं काफी हैं। भारत में काग़ज़ की मांग 6 से 7% प्रति वर्ष की दर से बढ़ रही है जिसका मुख्य कारण पैकेजिंग पेपर और एफएमसीजी उत्पादों के बाजार की बढ़ती मांग है।

गांधीजी ने स्वदेशी का सपना देखा था और हाथ काग़ज़ उद्योग पूर्णतया स्वदेशी है। अनेक उतार–चढ़ाव के बाद इस उद्योग ने अपनी एक अलग पहचान बनाई है। भारत की 90 प्रतिशत हाथ काग़ज़ इकाई में कच्चे माल के रूप में कॉटन होसिएरी वेस्ट का इस्तेमाल होता है। कुछ इकाई केले के रेशे, जूट फाइबर, सन्न हेम्प फाइबर को कच्चे माल के रूप में इस्तेमाल करती हैं। अरुणाचल प्रदेश में 1000 वर्ष पुराने हाथ काग़ज़ उद्योग में लोकता/डेफने को कच्चे माल के रूप में इस्तेमाल किया जाता है जिसे पुरातत्व विभाग द्वारा तथा वहां की प्राचीन शैली में पूजा में इस्तेमाल किया जाता है। आज के पर्यावरण सजग युग में– जब सम्पूर्ण विश्व सर्कुलैरिटी एवं सस्टेनेबिलिटी की तरफ बढ़ रहा है– हाथ काग़ज़ उद्योग किसी भी पेड़ को न काटते हुए, केवल अपशिष्ट को कच्चे माल के रूप में इस्तेमाल करता है तथा हाथ काग़ज़ प्रोडक्ट में परिकल्पित करता है। भारतीय हाथ काग़ज़ उद्योग द्वारा निर्मित काग़ज़ शादी के कार्ड, सर्टिफिकेट पेपर, लैंप शेड , स्टेशनरी आइटम, कैरी बैग, फाइल कवर, फोल्डर, एनवेलप, नोटिंग पेपर, फैंसी और डेकोरेटिव पेपर, विजिटिंग कार्ड, डायरी इत्यादि के रूप में तो घरेलू बाज़ार में बिकता ही है, इसने निर्यात बाज़ार में भी पहचान बनाई है।

(लेखिका कुमारप्पा राष्ट्रीय हाथ काग़ज़ संस्थान, जयपुर में कार्यरत हैं)

माला जो कर में फिरै

सोलर तुलसी माला मशीनः अब आजीविका और आसान

– डॉ. शशि प्रकाश मिश्रा

तुलसी की माला अब राजस्थान के भरतपुर जिले के नदबई गांव और मथुरा क्षेत्र के कई गांवों के सैकड़ों परिवारों की आजीविका का स्रोत है। इसके लिए तुलसी की लकड़ी को मशीन से छोटे–छोटे मनकों (बीड्स) में तराशा जाता है। हालांकि, इस पारंपरिक कला की चुनौतियाँ भी कम नहीं हैं।

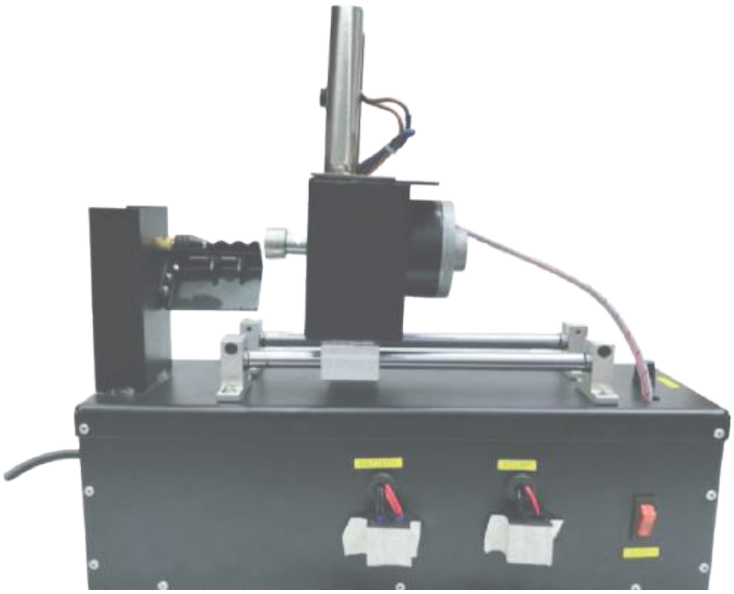

सोलर तुलसी माला बनाने की मशीन

पहले, आईआईटी –दिल्ली द्वारा विकसित RuTAG मॉडल की मशीनें कारीगरों को दी गई थीं। इनसे काम की गति तो बढ़ी, पर दो बड़ी समस्याएँ उभरकर सामने आईं:

1. मशीन से हल्का करंट लगने की घटनाएँ, जिससे डर बना रहता था।
2. गांवों में अक्सर बिजली न होने के कारण काम रुक जाता था।

इसके चलते कई कारीगर मशीन का उपयोग छोड़ने लगे या डर के साथ काम करने को मजबूर थे।

एमगिरी का हस्तक्षेपः व्यावहारिक समाधान

महात्मा गांधी ग्रामीण औद्योगीकरण संस्थान (एमगिरी), वर्धा की टीम ने इन समस्याओं को गंभीरता से लिया और गांवों में कारीगरों से बात की, उनके काम को देखा और फिर मशीन को नए सिरे से डिज़ाइन किया–एक ऐसी डिज़ाइन जो प्रयोगशाला नहीं, जमीनी सच्चाई को ध्यान में रखकर बनाई गई थी।

संस्थान ने सौर ऊर्जा से चलने वाली पोर्टेबल तुलसी बीड बनाने की मशीन विकसित की, जिसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं:

- 60 वॉट का PMDC मोटर (जो बैटरी से चलता है)
- 26Ah बैटरी, जो 6–8 घंटे तक काम करती है
- 100 वॉट का सौर पैनल, जिससे बैटरी दिन में चार्ज होती है
- कंपोजिट पावर सप्लाई सिस्टम (सौर + बैटरी + ग्रिड सपोर्ट)
- हेवी ड्यूटी स्विच, जिससे झटका नहीं लगता।

कारीगरों के लिए क्या बदला?

नदबई और आसपास के गांवों में फील्ड ट्रायल

के दौरान ये परिणाम मिले:

- मशीन से हल्के करंट लगने की घटनाएँ समाप्त हुई। मशीन पूरी तरह से सुरक्षित हुई।
- बिजली जाने पर भी काम जारी रहा– बैटरी और सोलर सपोर्ट की बदौलत।
- उसी बैटरी का रात में घर की बत्ती जलाने में उपयोग संभव हुआ।
- महिला कारीगरों में विश्वास और सुरक्षा की भावना पैदा हुई।
- काम की गति और गुणवत्ता में सुधार हुआ।

कारीगरों का कहना था कि उन्हें अब डर नहीं लगता क्योंकि बिजली चली जाए, तब भी काम चलता है और रात में बल्ब भी जलता है।

यह मशीन सरल, मजबूत और सस्ती है (लगभग ₹16,000–₹18,000 प्रति यूनिट मशीन, 26Ah बैटरी, 100 वॉट के सौर पैनल के साथ)। इसके सभी पुर्जे लोकल मार्केट में उपलब्ध हैं।

संस्थान ने स्थानीय कारीगरों को निम्नांकित के लिए 3 दिन का प्रशिक्षण दिया :

- स्विच या वायरिंग कैसे बदली जाती है
- मोटर की देखभाल कैसे करें
- बैटरी और सोलर पैनल को कैसे सुरक्षित रूप से जोड़ें।

ग्रामीण भारत के लिए एक मॉडल तकनीक

गौरतलब है कि यह नवाचार केवल तुलसी माला तक सीमित नहीं है। यह मशीन उन सभी के लिए फायदेमंद है, जो गांवों में लकड़ी के उत्पाद बनाते हैं,

जैसे:

- माला, खिलौने, सजावटी शिल्प
- ग्रामीण प्रशिक्षण केंद्र
- महिला स्वयं–सहायता समूह और कुटीर उद्योग

यह मशीन बिना बिजली के, आराम से चलती है। एमगिरी में मशीन तो बनती ही है, कारीगरों के साथ मिलकर समाधान भी निकाला जाता है। सरकारी विभागों, एनजीओ, CSR समूहों और क्लस्टर योजनाकारों के साथ मिलकर इस मॉडल को पूरे देश में फैलाया जा सकता है।

(लेखक एमगिरी, वर्धा में प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी हैं)

कर्मस्थल पर कर्मयोग

कर्मयोगी का विकासः भविष्य के लिए सरकारी कर्मियों का रूपांतरण

– काजल जैन

तेज़ी से बढ़ती तकनीकी प्रगति, जटिल प्रशासनिक चुनौतियों और बढ़ती नागरिक अपेक्षाओं वाले इस युग में, एक सक्षम, चुस्त और भविष्य के लिए तैयार सरकारी कार्यबल की आवश्यकता पहले कभी इतनी महत्त्वपूर्ण नहीं रही। इस अनिवार्यता को समझते हुए ही, भारत सरकार ने महत्वाकांक्षी "मिशन कर्मयोगी" पहल शुरू की है। यह परिवर्तनकारी कार्यक्रम लोक सेवकों में निरंतर सीखने, कौशल विकास और मानसिकता में बदलाव को बढ़ावा देकर भारत के सरकारी कार्यबल के क्षमता निर्माण ढाँचे में आमूल–चूल परिवर्तन लाने का प्रयास है।

कर्मयोगी की अवधारणा–जो भारतीय दर्शन में निहित है– एक ऐसे व्यक्ति को संदर्भित करती है जो अपने कर्त्तव्यों का पालन समर्पण, उत्कृष्टता और व्यापक हित के प्रति समर्पित भाव से करता है। कर्मयोगी के निर्माण का उद्देश्य ऐसे प्रतिबद्ध और कुशल सरकारी कर्मचारियों का विकास करना है जो आधुनिक शासन की जटिलताओं से प्रभावी ढंग से निपट सकें और बेहतर सेवा प्रदान कर सकें।

पृष्ठभूमि और तर्क

भारत का सरकारी कार्यबल कक्षा सत्रों के माध्यम से ज्ञान हस्तांतरण पर केंद्रित पारंपरिक प्रशिक्षण विधियों पर निर्भर रहा है। किन्तु, ये विधियाँ आज की प्रशासनिक चुनौतियों की गतिशील आवश्यकताओं को पूरा करने में अक्सर विफल रहती हैं, जिनके लिए तकनीकी कौशल, नेतृत्व क्षमता और नवीन सोच के संयोजन की आवश्यकता होती है।

कर्मयोगी
दैवम् विनतिप्रयत्नम् करोति यत्तदिवफलम्
A well planned work produces good results

डिजिटल तकनीकों का आगमन, बढ़ता वैश्वीकरण और बदलते नीतिगत परिदृश्य ऐसे कार्यबल की माँग करते हैं जो अनुकूलनशील, तकनीकी रूप से कुशल और आजीवन सीखने की ओर उन्मुख हो। राष्ट्रीय सिविल सेवा क्षमता निर्माण कार्यक्रम (एनपीसीएससीबी), जिसे **मिशन कर्मयोगी** के नाम से भी जाना जाता है (जिसका मुख्य घटक कर्मयोगी को

सुदृढ़ बनाना है) की परिकल्पना प्रशिक्षण प्रणालियों के आधुनिकीकरण, दक्षताओं के संवर्धन और निरंतर व्यावसायिक विकास की संस्कृति को समाहित करने के लिए की गई थी।

कर्मयोगी को मजबूत करने का दर्शन

कर्मयोगी शब्द संस्कृत के दो शब्दों– कर्म (कार्य/कर्त्तव्य) और योगी (अनुशासित भक्ति का अभ्यास करने वाला) से मिलकर बना है। यह एक ऐसे कार्यकर्ता के आदर्श को दर्शाता है जो समर्पित, नैतिक, सक्षम और केवल नियमित अनुपालन के बजाय उद्देश्य की भावना से प्रेरित हो।

कर्मयोगी को मज़बूत करने का उद्देश्य भारत के सरकारी कर्मचारियों को ऐसा सक्रिय परिवर्तनकर्ता बनाना है जो:

- नागरिकों की ज़रूरतों को समझें और उनका पूर्वानुमान लगा सकें।
- सुविचारित निर्णय लेने के लिए प्रौद्योगिकी और डेटा–चालित दृष्टिकोणों का उपयोग करें।
- नेतृत्व गुणों और समस्या–समाधान कौशल का प्रदर्शन करें।
- सेवा प्रदान करने के मामले में ईमानदारी, जवाबदेही और सहानुभूति बनाए रखें।

कर्मयोगी को मजबूत करने के प्रमुख स्तंभ

1. **योग्यता–चालित क्षमता निर्माण:** पहले के ज्ञान–केंद्रित मॉडलों के विपरीत, कर्मयोगी को मजबूत करने का उद्देश्य योग्यताओं को विकसित करना है जिसमें प्रभावी प्रदर्शन के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण और व्यवहार का मिश्रण हो। विभिन्न सरकारी भूमिकाओं के लिए योग्यता ढाँचे विकसित किए गए हैं ताकि तदनुसार प्रशिक्षण तैयार किया जा सके।
2. **व्यक्तिगत शिक्षण यात्राएँ:** यह स्वीकार करते हुए कि प्रत्येक सरकारी कर्मचारी की अलग–अलग भूमिकाएँ, ज़िम्मेदारियाँ और आकांक्षाएँ होती हैं, यह कार्यक्रम अनुकूलित शिक्षण–पथ प्रदान करता है। इन यात्राओं को डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म iGOT कर्मयोगी के माध्यम से सुगम बनाया गया है, जो पाठ्यक्रमों, मूल्यांकनों और प्रमाण–पत्रों के विशाल भंडार तक पहुँच प्रदान करता है।
3. **सतत और डिजिटल शिक्षण:** यह पहल एक बार के प्रशिक्षण–सत्रों के माध्यम से निरंतर सीखने पर ज़ोर देती है। iGOT प्लेटफ़ॉर्म किसी भी समय, कहीं भी संसाधनों तक पहुँच को सक्षम बनाता है, जिससे सीखना लचीला और मापनीय बनता है। भौगोलिक और तार्किक बाधाओं को दूर करने में यह डिजिटल परिवर्तन महत्त्वपूर्ण है।
4. **मानसिकता और व्यवहार परिवर्तन:** कौशल से परे, कर्मयोगी का निर्माण उत्तरदायी शासन के लिए आवश्यक सही दृष्टिकोण– जैसे नवाचार, सहयोग, जवाबदेही और नागरिक–केंद्रितता को विकसित करने का प्रयास करता है।
5. **पारितंत्र और सहयोग:** यह कार्यक्रम एक समग्र प्रशिक्षण पारितंत्र बनाने के लिए सरकारी मंत्रालयों, शैक्षिक संस्थानों, प्रशिक्षण संगठनों और अंतर्राष्ट्रीय भागीदारों के बीच सहयोग को बढ़ावा देता है।

iGOT कर्मयोगी प्लेटफार्म की भूमिका

कर्मयोगी के निर्माण के केंद्र में iGOT कर्मयोगी प्लेटफ़ॉर्म है। यह एक ऑनलाइन शिक्षण प्रबंधन प्रणाली है जो सरकारी कर्मचारियों की ज़रूरतों के अनुरूप प्रशिक्षण सामग्री प्रदान करता है। यह व्यक्तिगत शिक्षण–पथ, प्रगति ट्रैकिंग और डेटा–चालित मूल्यांकन की सुविधा प्रदान करता है। यह प्लेटफ़ॉर्म सुनिश्चित करता है कि क्षमता निर्माण प्रक्रिया पारदर्शी, मापनीय और प्रदर्शन मूल्यांकन प्रणालियों से जुड़ी हो।

प्रौद्योगिकी का लाभ उठाकर, iGOT प्रशिक्षण संसाधनों तक पहुँच को लोकतांत्रिक बनाता है, जिससे भारत भर के कर्मचारियों को–जिनमें दूरदराज के क्षेत्रों के कर्मचारी भी शामिल हैं–अपने कार्य–शेड्यूल को बाधित किए बिना अपने कौशल को बढ़ाने का अधिकार मिलता है।

कर्मयोगी को मजबूत करने का महत्त्व और लाभ

- **बेहतर शासनः** एक कुशल और प्रेरित सरकारी कार्यबल अधिक प्रभावी नीति निर्माण, बेहतर कार्यान्वयन और बेहतर सार्वजनिक सेवा उपलब्धता की ओर ले जाता है।
- **भविष्य के लिए तैयार कार्यबलः** यह पहल सरकारी कर्मचारियों को डिजिटल साक्षरता, डेटा विश्लेषण, डिज़ाइन थिंकिंग और नेतृत्व जैसे उभरते कौशल से लैस करती है।
- **बेहतर कर्मचारी मनोबल और जवाबदेहीः** प्रमाण–पत्रों के माध्यम से व्यक्तिगत शिक्षा और मान्यता प्रेरणा और जवाबदेही को बढ़ावा देती है।
- **लागत–प्रभावशीलता और मापनीयताः** डिजिटल प्रशिक्षण भौतिक बुनियादी ढांचे की आवश्यकता को कम करता है और बड़े पैमाने पर कौशल विकास को सक्षम बनाता है।
- **राष्ट्रीय दृष्टिकोण के साथ अनुकूलनः** कर्मयोगी का निर्माण भारत के व्यापक विकास लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक है, जिनमें सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) को प्राप्त करना और सुशासन को बढ़ावा देना शामिल हैं।

निष्कर्ष

मिशन कर्मयोगी एक प्रशिक्षण कार्यक्रम से कहीं बढ़कर है; यह सिविल सेवाओं के संचालन और विकास में एक आदर्श बदलाव है। यह भारत के सरकारी कार्यबल के आधुनिकीकरण और 21वीं सदी के शासन की माँगों को पूरा करने में सक्षम कर्मचारियों का एक समूह तैयार करने की दिशा में एक साहसिक कदम है। योग्यता–आधारित शिक्षा, व्यक्तिगत विकास–पथ और डिजिटल नवाचार को एकीकृत करके, यह पहल ऐसे सरकारी कर्मचारियों को तैयार करने का प्रयास करती है जो न केवल नीति–निष्पादक हों, बल्कि दूरदर्शी नेता और समर्पित लोक सेवक भी हों।

जैसे–जैसे भारत इस परिवर्तनकारी कार्यक्रम के साथ आगे बढ़ रहा है, यह दुनिया भर की सरकारों के लिए एक उत्तरदायी, कुशल और नागरिक–केंद्रित प्रशासनिक प्रणाली बनाने का उदाहरण प्रस्तुत करता है–एक समय में एक कर्मयोगी।

(लेखिका एमएसएमई मंत्रालय में उप–महानिदेशक (प्रभारी, राजभाषा) हैं)

पतंजलि–सूत्र

स्थूल से सूक्ष्म की यात्रा है योग

– सुभाष चंद्र लाल दास, भा.प्र.से.

योग भारत की विश्व को एक अनूठी देन है। यह हमारी मिट्टी की उपज है, जिसका उत्स वैदिक संस्कृति में है। योग की परंपरा इस देश में पुष्पित और पल्लवित होकर एक सार्वभौमिक रूप ले चुकी है। इसकी प्रासंगिकता और उपयोगिता आज समूचा विश्व स्वीकारता है। वास्तव में, योग मानव समाज के कल्याण का एक सशक्त और प्रभावी साधन बन चुका है।

योग का सबसे प्राचीन चित्रण हमें प्रागैतिहासिक काल में, मोहनजोदड़ो की खुदाई में प्राप्त एक सील में देखने को मिलता है। यह सील 'पशुपति' के नाम से प्रसिद्ध है और 4500 साल से अधिक पुरानी है। इसमें योग की मुद्रा में एक आकृति स्पष्ट रूप में दिखती है। कालांतर में, योग वेद पर आधारित एक परिपक्व और भारत के छह पारंपरिक दर्शनों में से एक प्रमुख दर्शन के रूप में उभर कर सामने आया। योग दर्शन को महर्षि कपिल के प्रख्यात सांख्य दर्शन का पूरक दर्शन–शास्त्र भी माना जाता है।

योग का व्यवस्थित निरूपण सर्वप्रथम महर्षि पतंजलि ने अपने 'योग सूत्र' में ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी में किया। योगसूत्र में योग की मौलिक परिभाषा दी गई है और अष्टांग योग का प्रतिपादन किया गया है। अष्टांग योग 8 सोपान में योग की विधा का वर्णन करता है। ये 8 चरण क्रमशः यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि हैं।

अक्सर लोग आसन और प्राणायाम को समूचा योग समझते हैं, पर ऐसा नहीं है। वस्तुतः योग मूलतः आध्यात्मिक विधा है, जिसमें मानसिक एवं शारीरिक पक्ष का समुचित समावेश है। यह एक प्राचीन विज्ञान है जो मनुष्य के व्यक्तित्व के समग्र विकास का रास्ता बताता है। अष्टांग योग के पहले 4 चरणों में बाहरी क्रियाएं शामिल हैं, अतः इन्हें बहिर्योग भी कहा जाता है, और आगे की चार क्रियाएं अंतर्मुखी होने के कारण उन्हें अंतर्योग कहा जाता है। इस तरह हम देख सकते हैं कि योग एक व्यापक और गहन अनुभूति वाली विधा का नाम है और आसन अथवा प्राणायाम जैसी क्रियाओं

तक सीमित नहीं है, हालांकि ये इसके अतीव महत्त्वपूर्ण अंग हैं।

यहां एक और बात उल्लेखनीय है कि महर्षि पतंजलि ने योगसूत्र में अत्यंत ही वैज्ञानिक और सिलसिलेवार ढंग से योग को एक विधा (अनुशासन) के रूप में स्थापित किया है। योग के इस मूल और अक्षय स्त्रोत को आधार बनाकर ही बाद में अनुभूति, रुचि और व्यवहार के आधार पर योग की अलग–अलग विधाएं निकली हैं और उनका प्रचार–प्रसार देश–विदेश में हुआ है।

योग पर प्रचलित प्रामाणिक ग्रंथों में महायोगी श्री गोरखनाथ जी द्वारा रचित ग्रंथ–गोरक्ष संहिता और महर्षि घेरंड द्वारा रचित *घेरंड संहिता* का भी उल्लेख किया जा सकता है। अलग–अलग समय पर प्रसिद्ध योगियों ने योग की परंपरा को आगे बढ़ाया है। बौद्ध और जैन परंपरा में भी अनेक सिद्ध योगियों का उल्लेख आता है। आधुनिक काल में स्वामी विवेकानंद, महर्षि योगानंद और स्वामी शिवानंद आदि ने योग के प्रचार–प्रसार में विशेष योगदान दिया और विदेशों में भी इसकी लोकप्रियता बढ़ाई।

आखिर में, भारत सरकार के अथक प्रयास से संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 11 दिसंबर, 2014 को घोषणा की कि **21 जून** को **अंतरराष्ट्रीय योग दिवस** के रूप में मनाया जाएगा। प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी 21 जून को यह दिवस उत्साह और व्यापक जन–भागीदारी के साथ भारत एवं अन्य देशों में भी मनाया गया। माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में विशाखापत्तनम में 11वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर 2 गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बने। पहला रिकॉर्ड 'योग सत्र के लिए एक ही स्थान पर सर्वाधिक उपस्थिति' का था। दूसरा रिकॉर्ड 'सबसे बड़ा सामूहिक सूर्य नमस्कार' का था। वस्तुतः, योग भारत को विश्व मंच पर विश्व गुरु बनाने की दिशा में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। यह कहना उचित होगा कि योग भारत के नेतृत्व में एक वैश्विक जन आंदोलन बन चुका है।

योग की इस सार्वभौमिक अपील का क्या कारण है, हजारों साल पुरानी हमारी इस ज्ञान परंपरा में ऐसी कौन सी शक्ति, ऐसा कौन सा प्राण तत्व है जिससे इसका प्रचार–प्रसार विश्व स्तर पर स्वतः संभव हो पा रहा है? इस प्रश्न का उत्तर योग की शाश्वत, संतुलित एवं समावेशी प्रकृति में निहित है। योग व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करता है, व्यक्ति को संयमित तथा संतुलित बनाता है। योग व्यक्ति तथा समष्टि के बीच तादात्म्य स्थापित करता है तथा एक सतत जीवन–शैली पर बल देता है ताकि मनुष्य और प्रकृति के बीच सामंजस्य बना रहे। योग एक दर्शन है और एक जीवन–शैली भी, जो व्यक्ति के आंतरिक और बाह्य पक्ष के बीच तारतम्यता स्थापित करता है।

आज जीवन की भाग–दौड़ और भोगवादी प्रवृत्ति के कारण लोग तनाव एवं अन्य मानसिक तथा शारीरिक व्याधियों से ग्रस्त होते जा रहे हैं। अतः, योग के दर्शन, व्यवहार और जीवन–शैली को उत्तरोत्तर अपनाने की नितांत आवश्यकता है। इससे हमारा व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक स्वास्थ्य सुरक्षित रह सकता है और इससे देश ही नहीं, समूची मानव जाति का कल्याण हो सकता है। योग की भावना भी यही है:

"सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे संतु निरामयाः।"

(लेखक एमएसएमई मंत्रालय में सचिव हैं)

भाषा–विमर्श

राष्ट्रीय एकता और हिन्दी

– सुशील मलिक

भारत बहुभाषी और बहु–सांस्कृतिक देश है, जहाँ कई भाषाएँ और बोलियाँ हैं। देश की विविधता को देखते हुए, एक ऐसी भाषा की आवश्यकता थी जो सम्पूर्ण राष्ट्र को जोड़ने का कार्य कर सके और सभी क्षेत्रों के लोग एक–दूसरे से आसानी से संवाद कर सकें। इसी आवश्यकता को पूरा करने के लिए, संविधान निर्माताओं ने हिन्दी को राजभाषा चुना था। हिन्दी का यह महत्त्व केवल भाषा की दृष्टि से नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति, एकता और पहचान के प्रतीक के रूप में भी है।

हिन्दी एक ऐसी भाषा है जो न केवल देश के विभिन्न हिस्सों में बोली जाती है, बल्कि इसकी साहित्यिक धरोहर भी बहुत समृद्ध है। महान कवियों और लेखकों ने हिन्दी साहित्य को नई दिशा दी है। हिन्दी के माध्यम से हम अपनी संस्कृति, परंपराओं और इतिहास को समझ सकते हैं। हिन्दी साहित्य हमारी भावनाओं, विचारों और संवेदनाओं का सरलतम और प्रभावशाली रूप है।

भारत में हिन्दी को राजभाषा का दर्जा 14 सितम्बर, 1949 को संविधान के अनुच्छेद 343 के तहत दिया गया। यह देश के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण क्षण था, क्योंकि इसके माध्यम से हिन्दी को एक कानूनी अधिकार प्राप्त हुआ। अब हिन्दी सरकारी कार्यों में प्रयुक्त एक प्रमुख भाषा है जिसमें सरकारी योजनाओं, नीतियों और घोषणाओं की जानकारी उपलब्ध है। सरकारी दफ्तरों, न्यायालयों और अन्य सरकारी कार्यों में हिन्दी का प्रयोग सरलता और पारदर्शिता सुनिश्चित करता है। इससे न केवल आम नागरिकों को आसानी से संवाद का अवसर मिलता है, बल्कि लोकतांत्रिक प्रक्रिया में उनकी भागीदारी भी बढ़ती है।

भारत में स्कूलों और कॉलेजों में शिक्षा के लिए हिन्दी एक प्रमुख भाषा है। देश के अधिकतर विद्यालयों में हिन्दी एक विषय के रूप में पढ़ाई जाती है, जिससे छात्रों को अपनी मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलता है। इसके साथ ही, हिन्दी भाषा में रोजगार के अवसर भी उपलब्ध हैं। कई सरकारी परीक्षाओं में हिन्दी का प्रश्न–पत्र भी अनिवार्य है।

आज के समय में, जब वैश्वीकरण का प्रभाव तेजी से बढ़ रहा है, हिन्दी का महत्त्व केवल भारत तक सीमित नहीं रह गया है। दुनियाभर में हिन्दी को पढ़ने और समझने का चलन बढ़ा है। अब कई देशों में विश्वविद्यालयों और संस्थानों में हिन्दी पढ़ाई जाती है। साथ ही, हिंदी सिनेमा और अखिल भारतीय स्तर पर रिलीज हो रही अन्य भाषा की फिल्मों से हिन्दी वैश्विक मंच पर पहुंच रही है। हिन्दी फ़िल्में और गाने न केवल भारत में, बल्कि विदेशों में भी अत्यधिक लोकप्रिय हैं। हिन्दी भाषा की यह वैश्विक स्वीकृति इसके एक प्रबल और सशक्त भाषा होने का प्रमाण है।

प्रतिवर्ष 14 सितंबर को मनाया जाने वाला हिन्दी दिवस न केवल राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देता है, बल्कि भाषाई विविधता में हिंदी की धरोहर बचाए रखने में भी सहायक है। यह हम सबकी हमारी जिम्मेदारी है कि हम न सिर्फ बोलचाल में, बल्कि सरकारी कामकाज में भी हिन्दी को अपनाएं।

(लेखक खादी और ग्रामोद्योग आयोग, अंबाला कैंट में सहायक निदेशक हैं)

रिपोर्ताज

हिंदी माहः बदलाव की बयार

– कल्पना सिंह

राजभाषा हिंदी के प्रति समर्पण और हिंदी की छिपी प्रतिभाओं को अभिव्यक्ति का अवसर देने के उद्देश्य से मंत्रालय में सितंबर–2025 को हिंदी माह के रूप में मनाया गया। इस दौरान 11 विशिष्ट प्रतियोगिताएं आयोजित हुईं जिनमें वाचन, कथाकहन, पैराग्राफ लेखन, चित्र विश्लेषण, आशुभाषण, अनुवाद, टिप्पण–प्रारूपण, हिंदी व्याकरण तथा राजभाषा ज्ञान और शब्द–सामर्थ्य प्रतियोगिताएं प्रमुख थीं।

इनमें कुछ प्रतियोगिताएं मंत्रालय में पहली बार आयोजित की गईं जैसे–वाचन, पैराग्राफ लेखन, चित्र विश्लेषण, अनुवाद और राजभाषा ज्ञान तथा शब्द–सामर्थ्य प्रतियोगिता। इन प्रतियोगिताओं को शुरु करने का प्रयोजन प्रतिभागियों की एकरसता को तोड़ना था ताकि उन्हें नएपन का बोध हो और वे नई ऊर्जा के साथ प्रतियोगिताओं में सहभागिता कर सकें। दूसरे, प्रतियोगिताएं इस प्रकार रखी गई थीं जिनमें प्रतिभागियों की हर प्रकार से परख हो सके। मसलन, **वाचन** प्रतियोगिता शुद्ध उच्चारण पर आधारित थी जिसमें विविध विषयक रनिंग मैटर, कविताएं और यहां तक कि ग़ज़लें भी शामिल थीं। प्राप्त जानकारी के अनुसार, एमएसएमई मंत्रालय यह प्रतियोगिता आयोजित करने वाला इकलौता मंत्रालय है। **चित्र–विश्लेषण** प्रतियोगिता अध्ययनशीलता और विश्लेषणात्मक क्षमता पर आधारित थी और सबसे अधिक प्रतिभागी इसी प्रतियोगिता में रहे। पहले से चली आ रही निबंध प्रतियोगिता की जगह **पैराग्राफ लेखन** प्रतियोगिता रखी गई ताकि प्रतिभागी का अधिक समग्रता से मूल्यांकन हो सके। राजभाषा ज्ञान तथा शब्द–सामर्थ्य प्रतियोगिता में वस्तुनिष्ठ प्रश्न थे, वहीं अनुवाद प्रतियोगिता में हिंदी और अंग्रेज़ी–दोनों पर पकड़ की पहचान की गई। सचिव, एमएसएमई ने इन प्रतियोगिताओं में बढ़ी भागीदारी पर प्रसन्नता व्यक्त की और बेंचमार्किंग के निदेश दिए।

इन प्रतियोगिताओं का मंत्रालय के प्रतिभागियों ने भी मुक्त हृदय से स्वागत किया। उल्लेखनीय है कि ये प्रतियोगिताएं मंत्रालय के कर्मियों के लिए ही थीं और इनमें 106 प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्ण भागीदारी की जो मंत्रालय में अवर सचिव स्तर तक के कर्मियों की कुल संख्या के 80 प्रतिशत से भी अधिक है। किसी एक प्रतियोगिता में अधिकतम भागीदारी 72 रही जो एक रिकार्ड है और किसी भी अन्य मंत्रालय से तुलनीय है। पूर्व की परंपरा के अनुसार, सभी प्रतियोगिताओं में डीईओ, यंग प्रोफेशनल और परामर्शदाताओं को भी भागीदारी की अनुमति दी गई क्योंकि वे मंत्रालय का एक अहम हिस्सा हैं और राजभाषा के संवर्धन में उनकी भूमिका भी हो सकती है।

मंत्रालय में, हिंदी माह के दौरान ही, 29 सितंबर को **''भारतीय ज्ञान मिशन''** पर एक कार्यशाला का भी आयोजन हुआ जिसमें दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर डॉ. पूरनचंद टंडन अतिथि वक्ता/विषय विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित थे। पूरी कार्यशाला प्रारंभ से ही संवाद शैली में आयोजित की गई। संभवतः, किसी भी मंत्रालय में इस शैली में कार्यशाला आयोजन का यह पहला प्रयोग था। सहभागियों को यह प्रयोग रास आया और वे अंत तक अपनी सीट से बंधे रहे। सहभागियों ने इस दौरान अतिथि वक्ता से भारतीय ज्ञान के स्रोत, उनमें छिपे नैतिक मूल्यों, पारंपरिक ज्ञान के जीवन–शैली पर प्रभाव, तकनीक और आधुनिकता के मौजूदा दौर में पारंपरिक ज्ञान के महत्त्व, ज्ञान के मामले में विश्व समुदाय को भारत की मौलिक देन और इसके भविष्य आदि संबंधी कई दिलचस्प प्रश्न पूछे जिनमें हिंदी पर चर्चा भी शामिल थी। सहभागियों ने इस प्रकार की कार्यशाला का समय और संख्या बढ़ाए जाने की इच्छा व्यक्त की।

इन आयोजनों की सफलता से इस विश्वास को बल मिला है कि हिंदी के प्रति लोगों की रूचि बढ़ रही है और वे हिंदी में लोगों को सुनना भी चाहते हैं और खुद अपने विचार भी प्रकट करना चाहते हैं। हिंदी के प्रति उच्चाधिकारियों की सहजता से भी अधिकारी–कर्मचारी प्रेरित–प्रोत्साहित हुए हैं। मंत्रालय के तमाम अधीनस्थ कार्यालयों से भी हिंदी माह/पखवाड़ा/सप्ताह के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं और कार्यशालाओं के आयोजन की ख़बरें मंत्रालय को मिली हैं।

(लेखिका एमएसएमई मंत्रालय में वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी हैं)

लक्ष्य: 2047

विकसित भारत का प्रशासन–तंत्र

– सुरेन्द्र प्रसाद पंत

विकास एक अनवरत प्रक्रिया है और हर देश विकास के उच्च मानदंडों को छूना चाहता है। माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने भी इसी भावना से भारत को वर्ष 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया है। कोई भी देश तभी विकसित कहलाता है, जब वह कुछ महत्वपूर्ण मानदंडों को छुए अथवा उससे आगे निकल जाए। यह काम रातों–रात नहीं हो सकता। इसके लिए निर्धारित गति से प्रगति करनी होगी और हर क्षेत्र में आत्मनिर्भरता हासिल करनी होगी। स्पष्ट है कि पारंपरिक तौर–तरीक़ों से यह संभव नहीं होगा। *विकसित भारत* बनने के लिए हमें इनमें सुधार करने होंगे, नए तरीक़े से सोचना होगा और उस पर अमल के लिए तेज़ी से आगे बढ़ना होगा।

सरकार की योजनाओं पर अमल और उसकी निगरानी सरकारी कर्मी करते हैं। भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए जरूरी है कि हर स्तर के सरकारी कर्मी पूरी निष्ठा और ईमानदारी से अपने कार्यों और दायित्वों का निर्वहन करें। यह कर्त्तव्य पालन आम जनता के प्रति जवाबदेही और जिम्मेदारी की भावना से हो। यह तभी संभव होगा, जब एक सरकारी कर्मी के तौर पर हम खुद को जनता का सेवक समझें, न कि जनता का हुक्मरान।

सरकारी कर्मियों को यह भावना मन में बिठानी होगी कि भले वे सरकारी तंत्र का हिस्सा हैं, लेकिन वे भी कानून के दायरे में हैं, इसलिए उनसे किसी भी हाल में कानून का उल्लंघन न हो। उसके भीतर यह भय भी होना चाहिए कि यदि वह कानून तोड़ेगा, तो समाज उसे घृणा की दृष्टि से देखेगा और उसका बहिष्कार हो सकता है।

हर विकास जनता के कल्याण से जुड़ा होता है। इसलिए, रोज़गार की उपलब्धता हर देश और सरकार के लिए एक संवेदनशील मुद्दा होता है। स्मरण रहे कि रोज़गार का मतलब सरकारी सेवा से जुड़ना मात्र नहीं है। रोज़गार की यह पारंपरिक धारणा विगत वर्षों में टूटी भी है। विकसित भारत का अर्थ है– हर किसी के पास उसकी योग्यता के अनुसार रोज़गार के अवसर

की उपलब्धता। इसमें स्व–रोज़गार भी शामिल है। रोज़गार की यही अवधारणा समाज के आर्थिक उत्थान में सहायक होगी।

सोशल मीडिया पर आए दिन हम पश्चिमी व्यवस्था की तस्वीरें देखते हैं जहां सफाई एक सामूहिक उत्तरदायित्व है। भारत में इस दिशा में बहुत काम किया जाना शेष है। हम अपनी स्वच्छता का तो ध्यान रखते हैं, लेकिन आस–पास की साफ–सफाई हमारे लिए उतना महत्वपूर्ण मुद्दा नहीं है। हमारी नदियां और धर्मस्थल तक इससे अछूते नहीं हैं। यह चिंतनीय है। स्वच्छ परिवेश का सीधा संबंध हमारी ऊर्जा से है। हमें ध्यान रखना होगा कि सड़क हो या घर अथवा ऑफिस हो– गंदगी न फैले।

माननीय प्रधानमंत्री जी ने सर्वसमावेशी समाज का नारा दिया है जहां सभी समान हों और ऊँच–नीच का भेद न रहे। समाज में सबके प्रति समान दृष्टि से ही ब्यूरोक्रेसी न्याय कर सकती है।

राष्ट्र का निर्माण व्यक्ति और समाज से ही होता है। सच्चरित्र व्यक्ति से ही सभ्य समाज का निर्माण हो सकता है। नैतिक रूप से जो व्यक्ति और समाज उच्च पैमाने पर ख़रा उतरता है, वही *वसुधैव कुटुंबकम* की भावना रख सकता है। ब्यूरोक्रेसी को भी हर पहलू में अनुशासन बनाए रखते हुए नैतिकता के मानदंडों पर ख़रा उतरना होगा तभी एक चरित्रवान समाज का निर्माण हो सकेगा।

यह एक सामान्य अनुभव है कि सरकारी कर्मी व्यवस्था का हिस्सा बनते ही अपने को खास समझने लगता है। आजीविका के प्रति निश्चिंतता की भावना के कारण उसमें समय के साथ–साथ जिम्मेदारी की भावना जिस अनुपात में बढ़नी चाहिए, बहुधा उसे लेकर आमजन को शिकायतें रहती हैं। सरकारी कर्मियों में निजी क्षेत्र के मुकाबले वेतन कम होने की शिकायती प्रवृत्ति भी देखी जाती है। इसका मूल कारण यह है कि सरकारी कर्मी अपने को एक ऐसे जनसेवक के रूप में देखता ही नहीं है जिस पर समाज के विकास का एक बड़ा दायित्व है। उसे यह समझना होगा कि जो ईमानदारी से सेवा कर रहा है, वही सबसे बड़ा है।

भारत को यदि 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाना है, तो सरकारी कर्मियों को *काल करे सो आज कर* की नीति पर अमल करना होगा। लेटलतीफी की आदत और टालू रवैए से बचना होगा। फाइलों पर लिखा–पढ़ी भी स्पष्ट होनी चाहिए जिनमें निष्पक्षता साफ–साफ झलके।

सरकारी सेवा मौज–मस्ती के लिए नहीं, कर्त्तव्य के निर्वहन के लिए है। यह ज़िम्मेदारी 140 करोड़ लोगों के प्रति है, इसका ख़याल हर सरकारी कर्मी को होना चाहिए। उन्हें समझना होगा कि फाइलों के निपटान में हर देरी का दूरगामी प्रभाव होता है। इसलिए, अब सरकार को कर्मयोगी क्षण पैदा करने वाले कर्मी चाहिए जिनमें उत्तरदायित्व की भावना काम के निर्धारित घंटे तक सीमित न हो। सरकार इसके लिए अलग से भी प्रयास कर रही है जिसमें विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण शामिल हैं।

हम सब जानते हैं कि विभिन्न स्तरों पर पदोन्नति में कई तरह की विसंगतियां हैं। यदि सरकारी कर्मी इसी चिंता में डूबा रहे तो वह अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं कर पाएगा। अब सरकार को ऐसे कर्मियों की ज़रूरत है जिसकी दिशा स्पष्ट हो और जिसमें अपने विषय–क्षेत्र की पूरी समझ हो, जो शीघ्रता से निर्णय ले सकें और निर्णय पर अहंकार को हावी न होने दें। उन्हें समझना होगा कि हर चीज़ के लिए कानून संभव नहीं और कानून में सारी बातें न लिखे होने का अर्थ यह नहीं है कि उस मामले में नकारात्मक निर्णय लिया जाए। इसे ठीक–ठीक समझ लेने वाले लोग ही सबका सम्मान करना सीखेंगे और भविष्य की व्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण होंगे।

आइए, गौरव की भावना के साथ अपने देश को विकसित बनाने का संकल्प लें। संकल्प लें कि हमारा चरित्र शीशे की तरह साफ रहे और हम राष्ट्र–सेवा में ईमानदारी से सहयोग दें। वर्ष 2047 के विकसित भारत के लिए आज इसी आहुति की आवश्यकता है।

(लेखक एमएसएमई मंत्रीजी के निजी सचिव हैं)

तत्त्व–चिंतन

गुरु और भगवान

– उर्वशी

भारतीय संस्कृति में गुरु और भगवान को बहुत अधिक महत्त्व दिया गया है। ये दोनों जीवन के उस मार्ग के दीप हैं जो अज्ञान से ज्ञान, भ्रम से भक्ति और मनुष्य से महात्मा की ओर ले जाते हैं। लेकिन, यह प्रश्न कि भगवान और गुरु में बड़ा कौन है, एक गूढ़ विचार–यात्रा की मांग करता है।

"गुरु" – वह ज्योति है जो अंधकार में डूबे चित्त को प्रकाश की ओर ले जाती है। गुरु शब्द का अर्थ ही है – ''गु'' अर्थात् अंधकार और ''रु'' अर्थात प्रकाश। जो अज्ञानरूपी अंधकार को मिटाकर ज्ञान का प्रकाश दे, वही सच्चा गुरु है।

कबीर कहते हैं–

"गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूं पाय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय?"

जब गुरु और भगवान दोनों सामने हों, तो पहले चरण–स्पर्श किसका करें? कबीर कहते हैं – गुरु का, क्योंकि गुरु ने ही हमें भगवान से मिलाया। यही गुरु की महिमा है।

इसी प्रकार, पंचमहाभूतों से बनी इस सृष्टि के रचयिता भगवान का अर्थ है–

'भ' – भूमि, 'ग' – गगन, 'व' – वायु,
'अ' – अग्नि और 'न' – नीर।

नाम चाहे जो दिया गया हो, लेकिन हर धर्म, हर संस्कृति ने उसी परमतत्व को सर्वशक्तिमान माना है। वह सर्वव्यापी, सर्वज्ञ और सर्वहितैषी है। उसी से हमारा जीवन है। कई लोग सोचते हैं–सत्य की राह पर चलना ही पर्याप्त है; लेकिन नहीं, सत्य तो सबका अपना–अपना होता है। इसलिए, मीरा कहती है–सत की नाव, खेवटिया सतगुरु। अर्थात् सत्य की नाव पर्याप्त नहीं, कोई खेवैया भी चाहिए, जो सत्य की नाव को उस पार ठांव लगा दे। वस्तुतः, बिना उचित मार्गदर्शन के, जीवन के दिशाहीन हो जाने का ख़तरा होता है। गुरु इसी कमी को पूरा करता है।

गुरु ही वह सेतु है, जो शिष्य को परमात्मा की ओर ले जाता है। गुरु, ब्रह्मा की भांति सृजन करता है – ज्ञान का। विष्णु की भांति पालन करता है – संस्कारों का। और, शिव की भांति नाश करता है – अज्ञान, अहंकार और भ्रम का। तभी कहा गया है कि– "गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु, गुरु देवो महेश्वरः, गुरु साक्षात् परब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः?"

भारत की गुरु–शिष्य परंपरा शिक्षा तक सीमित नहीं थी। यह संस्कार, समर्पण और साधना की परंपरा रही है। न गुरु के बिना आत्मज्ञान संभव है, न आत्मज्ञान के बिना भक्ति। और, भक्ति न हो तो मुक्ति भी असंभव। तुलसी कहते हैं–बिनु सत्संग विवेक न होई। सत्संग का अर्थ है–गुरु का सान्निध्य। गुरु ही वह प्रकाश–पुंज है, जो हमें आत्मा से परमात्मा की ओर ले जाता है। राम और वशिष्ठ, कृष्ण और संदीपन के उदाहरणों से भारतीय संस्कृति में गुरु को ईश्वर के समकक्ष स्थान मिला है।

(लेखिका एमएसएमई मंत्रालय में कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी हैं)

कथालोक

त्यागपत्र

– प्रीति यादव

मैं, हतप्रभ सा खड़ा था। बारिश की बूंदें मेरे बालों से सरक कर आंसुओं से मिल रही थीं। मेरे हाथों में रखा सफेद कागज पानी से भीग रहा था। पिछले कुछ सालों की घटनाएं मेरी आँखों के सामने चलचित्र की तरह घूमने लगीं।

एक बड़े अस्पताल में डॉक्टर के पद पर मेरा चयन हुआ था। मन में बड़ी आशाएं थीं। मगर कुछ समय के बाद ही मुझे जीवन के कड़वे सच का अनुभव होने लगा। रात–दिन कड़ी मेहनत और लगन से काम करने के बाद भी कभी कोई सराहना नहीं। मैं अपने खानदान का पहला डॉक्टर था जबकि मेरे कई सहकर्मी बड़े–बड़े चिकित्सकों के सबंधी थे। इस कारण मेरे और उनके बीच एक अनकही दीवार–सी थी। मित्रता और सद्भावना तो दूर, मेरे सहकर्मी मुझे ही उत्पीड़ित करने लगे। सोचता था, परिश्रम और कर्त्तव्य–निष्ठा ही पदोन्नति का आधार है, सो अनुशासन के साथ अपना काम करता रहा। अस्पताल में, मैं अपना सर्वश्रेष्ठ दे रहा था। पदोन्नति की आस में, तमाम उत्पीड़न भी धैर्य के साथ झेलता रहा।

लेकिन, उस क्षण मेरे हृदय को गहरा आघात लगा, जब पदोन्नति की घोषणा हुई। पता चला कि मेरे एक अन्य सहकर्मी को पदोन्नति दे दी गई जो एक नामी डॉक्टर के पुत्र थे। वहां एक पल भी ठहरना मुश्किल था। गला रुंध गया। घर आकर कुर्सी पर बैठे न जाने कितने घंटे बीत गए। जो सच्चाई मेरे सामने थी, उस पर विश्वास करना कठिन था। ख़याल आया, ऐसी नौकरी का अर्थ ही क्या, जिसमें न कोई प्रशंसा हो, न कोई उन्नति और न ही कोई गर्व। जीवन के पांच वर्ष व्यर्थ ही गए। ऐसी व्यवस्था से तो त्यागपत्र ही श्रेष्ठ है। आख़िरकार, मैंने त्यागपत्र लिख लिया। उस समय रात के कोई साढ़े तीन बज रहे थे।

सूर्योदय में अधिक वक्त न था, मगर प्रतीक्षा की वह घड़ी युगों–सी लंबी लगी। सुबह तैयार होकर मैं सधे कदमों से अस्पताल की ओर पैदल ही बढ़ चला। लेकिन कुछ ही क्षण बाद मौसम बदलने लगा। बादल घिर आए थे और बारिश की सम्भावना बढ़ चली थी। मैंने तेज़ कदमों से चलना शुरु किया। हवा भी सर्द थी, सो मैंने अपना सफेद कोट पहन लिया था जो मुझे इस्तीफ़े के साथ अस्पताल को लौटाना था। वही सफेद कोट जो कभी मेरा सपना हुआ करता था, आज बारिश और सर्द हवा से बचने का साधन भर रह गया था। जीवन का लक्ष्य धुँधला लगने लगा था। तभी ख़याल आया– मैं डॉक्टर क्यों बनना चाहता था? क्या यह अस्पताल ही मेरा लक्ष्य था?

अचानक मुझे एक स्त्री की आवाज सुनाई दी– "डॉक्टर साहब!''

मैंने अनसुना कर दिया। मैं तो त्यागपत्र देने जा रहा था।

फिर आवाज़ आई– "डॉक्टर साहब...मैं धनिया!!"

धनिया? मेरे पैर अपने आप रुक गए। मैंने मुड़कर देखा। धनिया ही तो है यह। दुबली–पतली सी। अपने उन्हीं दो बच्चों के साथ। बड़ी बेटी जो पढ़ने में तेज है लेकिन बचपन से पोलियो ग्रस्त है। छोटा बेटा जिसका सिर शरीर के अनुपात में बढ़ा हुआ है...आँखें बाहर को निकलती हुईं...डाउन सिंड्रोम का शिकार है। धनिया करीब छह महीने पहले बच्चेदानी का ऑपरेशन कराने आयी थी, लेकिन शरीर में खून की कमी के कारण उसकी जान को खतरा हो गया था। बड़ी कठिनाई से धनिया की जान बचाई जा सकी थी।

धनिया का पति बाहर काम करता था, सो इलाज के लिए धनिया अकेले ही अपने दोनों बच्चों के साथ अस्पताल आती थी। पैसे की कमी के चलते धनिया अस्पताल से जल्दी छुट्टी कराकर चली गयी थी। उसका चिकित्सक होने के नाते मैंने कई बार कहा भी कि वह पूरी तरह ठीक होकर ही घर जाये और बीच–बीच में जांच कराने के लिए आती रहे। मगर धनिया उसके बाद आई ही नहीं। उसकी और उसके परिवार की दशा देखकर चिंता होती और मेरे कई दिन इस ग्लानि में बीते कि मैं उसकी कुछ सहायता न कर सका।

आज फिर धनिया अचानक मिली थी। उसकी दशा सही नहीं जान पड़ती। चेहरे का रंग उड़ा हुआ है। शायद फिर खून की कमी हो गई है। इस बार धनिया के साथ एक आदमी भी आया हुआ है।

"ये मेरे पति हैं", धनिया ने कहा। हम दोनों ने एक दूसरे का अभिवादन किया।

धनिया के पति के चेहरे की मुस्कान इतनी क्षीण थी कि मैंने पूछ ही लिया– "क्या हुआ धनिया...सब ठीक तो है?"

धनिया की आँखों में दुःख छलक आया, "नहीं, डॉक्टर साहब। मैंने आपकी बात न मान कर भारी गलती की। पूरा इलाज न करवाने के कारण ऑपरेशन के बाद मेरे शरीर में इन्फेक्शन बहुत बढ़ गया है।"

मैंने पूछा, "तो अभी तक इसका इलाज़ क्यों नहीं कराया?"

धनिया बोली, "हमारे आसपास के गांवों में एक ही डॉक्टर है और उसके पास पर्याप्त साधन नहीं हैं। इलाज़ के लिए शहर आना मुश्किल था, सो पति के लौटने के बाद ही इलाज़ के लिए आ सकी। शहर में भी इसी अस्पताल में आना सम्भव हो पाया क्योंकि यहां हम गरीबों को कम फीस में बढ़िया सुविधाएं मिल जाती हैं। आप जैसे अच्छे डॉक्टर भी मिल जाते हैं जो हमारी हर तरह से सहायता करते हैं।"

हर तरह से सहायता? बूंदाबांदी शुरू हो गई थी। मुझे छांव में जाना ठीक समझा। अस्पताल भी पास ही था।

मैंने बात खत्म करने का प्रयास किया, "नहीं नहीं, मैं तो बस अपना काम कर रहा था। कोई और डॉक्टर होता, तो वह भी यही करता।"

धनिया बोल उठी, "डॉक्टर साहब, मैं अपने दो बच्चों के इलाज़ के लिए बहुत–से डॉक्टरों के पास जा चुकी हूं, लेकिन जिस तरह आप अपने मरीजों का अपने परिवार की तरह ध्यान रखते हैं, वह और कहीं नहीं। पिछली बार मुझे आपने जीवनदान दिया। आज इतनी दूर इलाज़ के लिए आने का साहस भी इसी कारण किया कि आपके हाथों में जीवन सुरक्षित होने का भरोसा है।"

मुझे अपना चेहरा अचानक तपता हुआ महसूस हुआ। खुद पर आए क्रोध से या शर्म से...कह पाना कठिन था।

"बारिश तेज हो गयी है डॉक्टर साहब...चलिए अस्पताल के अंदर चलते हैं", कहकर धनिया और उसका परिवार तेजी से अस्पताल की ओर बढ़ चला क्योंकि उनके पास छाता नहीं था।

छाता मेरे पास भी नहीं था, मगर मैं अपने स्थान से हिल नहीं पाया। आँखें जाने क्यों डबडबा गईं।

मैं हतप्रभ सा खड़ा था। बारिश की बूंदे मेरे बालों से सरक कर आंसुओं से मिल रही थीं। अचानक धनिया का पति मेरे सामने आ खड़ा हुआ। वह अपने परिवार को अस्पताल की छाया में पहुंचाकर वापस आ गया था। कहीं से एक छाता भी ले आया था। मेरा गला भर आया।

बारिश का शोर तेज हो गया था। उस शोर में एक आवाज सुनाई दी– "आगे बढ़िए डॉक्टर साहब।"

मेरे पैर अपने आप ही अस्पताल की ओर बढ़ चले। मेरा सफेद कोट भीग कर शरीर से ऐसे चिपक गया था, मानो यह मेरे ही अस्तित्व का एक हिस्सा हो।

मेरा त्यागपत्र सड़क पर पड़ा था। कल के अक्षर आज की बारिश में भीगकर मिट रहे थे।

(लेखिका केवीआईसी में कार्यकारी हैं)

यादों के झरोखे से

शहर से गांव की ओर

– शैलेश राणा

सत्तर का दशक बीत रहा था। देहरादून उन दिनों इतना भीड़ भरा नहीं था। हमारा घर शहरी इलाक़े में था। पढ़ाई–लिखाई की सारी सुविधाएं मौजूद थीं, लेकिन किशोर मन जाड़े की छुट्टियों का इंतज़ार करता। मुझे अच्छी तरह याद है, जाड़े की हमारी हर छुट्टी ननिहाल में बीतती। देहरादून से महज 25 किलोमीटर दूर, सुरम्य वादियों से भरा प्राकृतिक वातावरण। छुट्टियों के वे दिन मेरे जीवन के स्वर्ण–काल थे। ननिहाल में बिताये उन पलों की स्मृतियां आज भी जीवंत हैं।

उस ग्रामीण अंचल में हम बच्चों के लिए एक अनकहा–सा आकर्षण था। ननिहाल की हमारी दुनिया शहरी देहरादून से बिल्कुल अलग थी। पशुधन ग्राम्य जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा होते हैं। हमारे दिन की शुरुआत भी उन्हीं के साथ होती। सुबह मवेशियों को चराने निकलना, पास की ही एक नदी में जी–भर कर तैरना, क्या दिन थे मस्ती के! और तब, कितना स्वच्छ था नदी का पानी! नीचे तैरती मछलियां और कछुए इतने साफ दिखते, मानो हम उन्हें एक्वेरियम में देख रहे हों! न खाने–पीने की सुध, न होमवर्क की चिंता। वहीं पत्थरों पर पड़े न जाने कब शाम हो जाती। शाम को घर लौटने से पहले, नदी–स्नान और फिर अपने मवेशियों को लेकर घर की ओर प्रस्थान।

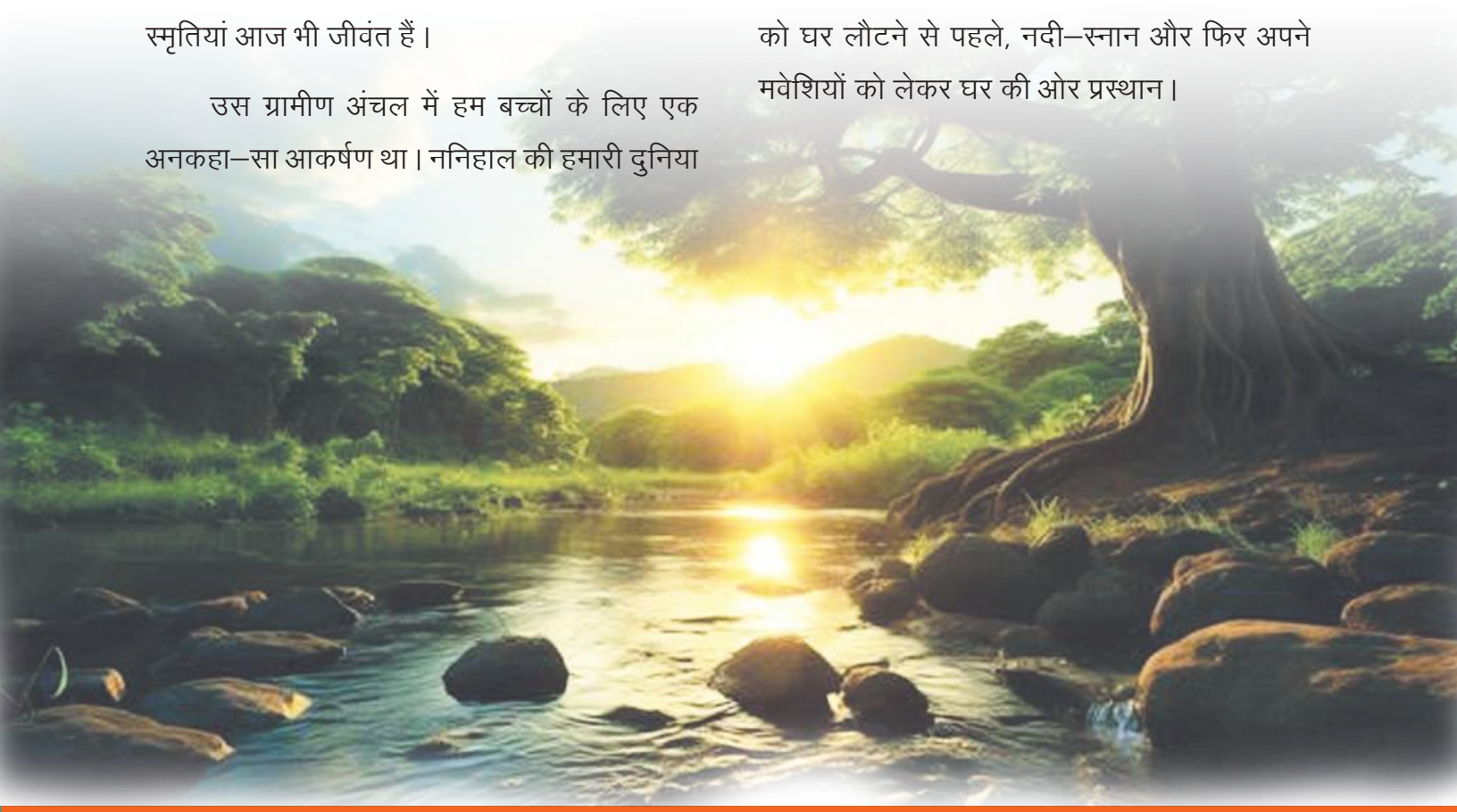

मुझे याद है, शाम के समय जंगल से गुजरते हुए तरह–तरह के जानवरों की आवाजें आतीं। डर भी लगता था। अक्सर, पानी भरने के लिये हम बच्चों को दूर जाना पड़ता था। गेहूं की फसल पकती, तो उसके पुले बनाकर घर लाया जाता था। ध्यान रखना होता था कि बारिश में वह भीगने न पाए। न जाने, हमारी कितनी छुट्टियां इसी प्रकार हंसते–खेलते, अपने परिवेश को समझते–जीते बीती। नौकरी–चाकरी के सिलसिले में शहरी प्रवास के कारण वह दौर भले पीछे छूट गया हो, लेकिन ननिहाल में मिले निश्छल प्रेम–स्नेह से सराबोर, खुशियों के उन पलों की याद आज भी ज़ेहन में मौजूद है। जब कभी अपनी बेटियों से बचपन के उस दौर की चर्चा करता हूं, वे उत्सुकता और कौतूहल से मुझे सुनती हैं। शहरी परिवेश में पली–बढ़ी इन बेटियों के लिए वह सब किसी ख़्वाब से कम नहीं।

दूसरी तरफ, आज के बच्चों का जो जीवन है, उसे देखकर ननिहाल की वह स्मृति और घनी हो जाती है। तब की हमारी दुनिया घर–परिवार, सगे–संबंधी और आस–पड़ोस से बनती थी। और अब? आज हर बच्चे की दुनिया मोबाइल में ही सिमट कर रह गई है। परिवार छोटे होते जा रहे हैं और उस छोटे से परिवार में भी हर आदमी मोबाइल में गुम है। ज़ाहिर है, बच्चा भी जो देखेगा, वही सीखेगा। बढ़ते शहरीकरण ने बच्चों से खेलने की जगहें छीन ली हैं। नदी के नाम पर आज सिर्फ गंदे नाले हैं।

शहर और तकनीक–केंद्रित विकास ने हमारी पीढ़ी को बहुत कुछ दिया है, लेकिन इसने हमारे बचपन का वह कोना छीन लिया है जहां जीवन में एक स्वाभाविक लय थी और जहां व्यक्ति की सामाजिकता बहुत मायने रखती थी। आज भी ऐसी बहुत–सी सर्विस इंडस्ट्रीज गांव में खोली जा सकती हैं जो इस प्रकार का माहौल हमारे बच्चों ओर युवा पीढ़ी को दे सकती हैं। उत्तराखंड की पिछली एक यात्रा में मैंने देखा, कुछ पहाड़ी गांव में अब सर्विस इंडस्ट्रीज खुल गई हैं जहां शहरी लोगों को गांव में होने का एहसास कराया जाता है। जिन लोगों की पैदाइश शहर की है, वे वहां जाकर ग्राम्य जीवन की एक झलक लेते हैं और रोमांच से भर उठते हैं। ऐसी सर्विस इंडस्ट्रीज का एक पोर्टल भी बनाया जा सकता है जहाँ पर सरकारी कर्मियों, उद्योग जगत और कॉर्पोरेट हाउस से जुड़े कर्मी स्वयं भी इस अनुभव से गुज़र सकें और अपने बच्चो को भी बता सकें कि भौतिक सुख–सुविधा, धन–संपत्ति से इतर भी इस दुनिया में ऐसा बहुत–कुछ है जो बेशकीमती न होकर भी अनमोल है और जो असंतुलित विकास के कारण समय के थपेड़ो में कही खो गया है।

(लेखक एमएसएमई मंत्रालय में उप–सचिव हैं)

सैर–सपाटा

दिल्ली–ऋषिकेश: एक रोमांचक यात्रा

– रविन्द्र कुमार

16 मई, 2025 – सफर की शुरुआत

सुबह 6 बजे मैं अपनी कार लेकर दिल्ली से निकला। कुछ करीबी दोस्त भी साथ थे। कार की स्टियरिंग खुद संभालने का अलग ही मज़ा होता है। गाड़ी में हल्का म्यूज़िक चल रहा था। रास्ते में ढाबों पर रुकते हुए हमने गरमा–गरम पराठे और चाय का आनंद लिया। पहाड़ों की ओर बढ़ते हुए मौसम भी सुहावना होता गया।

दोपहर करीब 1 बजे हम ऋषिकेश पहुँचे। हमारा टेंट कैंप गंगा नदी के किनारे बना हुआ था– शांत, सुंदर और प्रकृति के करीब। टेंट में चेक–इन करने के बाद हमने थोड़ा आराम किया। शाम को त्रिवेणी घाट पर गंगा आरती में शामिल हुआ– मंत्रों की ध्वनि, दीपों की रौशनी और गंगा की लहरें एक अलौकिक अनुभव दे रही थीं।

रात को कैंप में बोनफायर का आयोजन था। आग के चारों ओर बैठकर हमने चावल के साथ उत्तराखंड की काफुली, झोली, गहत की दाल जैसे स्थानीय व्यंजनों का स्वाद लिया। कुछ स्थानीय मिठाइयाँ भी परोसी गईं। साथ में गिटार की धुन और दोस्तों की बातें – सब कुछ बहुत खास था।

फिर आया 17 मई, 2025 का वह रोमांच भरा दिन!

पूरा दिन एडवेंचर से भरा हुआ। सुबह नाश्ते में हमें **उत्तराखंडी आलू के गुटके** और गरमा–गरम पूड़ी–सब्ज़ी मिली। थोड़ी देर बाद हम निकल पड़े **रिवर राफ्टिंग** के लिए।

गंगा की लहरों से खेलते हुए जब हमारी राफ्ट ऊपर–नीचे हिलती, तो रोमांच अपने चरम पर होता। हर रैपिड एक नया अनुभव था। रास्ते में हमने क्लिफ जंपिंग भी की।

इसके बाद हमने ज़िपलाइनिंग की। एक पहाड़ी से दूसरी पहाड़ी तक हवा में उड़ते हुए जाना डर और मज़ा दोनों साथ–साथ दे रहा था।

शाम को टेंट में लौटकर हमें ईवनिंग स्नैक्स में पकौड़े, चाय और गर्म मूंगफली मिली। रात में फिर से बोनफायर हुआ, इस बार हम सबने अपने अनुभव साझा किए और ताजे लोकगीतों पर थिरकने का भी मौका मिला।

अगली सुबह नाश्ते के बाद हमने पास के झरने की ओर ट्रैकिंग की। रास्ता थोड़ा कठिन था लेकिन मंज़िल बेहद खूबसूरत – झरने का ठंडा पानी और उसके आसपास की हरियाली ने दिन बना दिया।

ट्रैक से लौटकर हमने ऋषिकेश की सबसे चर्चित एडवेंचर एक्टिविटी – बंजी जंपिंग का अनुभव लिया। ऊँचाई से कूदना मेरे लिए एक चुनौती थी, लेकिन जैसे ही मैंने छलांग लगाई, ऐसा लगा जैसे ज़िंदगी का सबसे बड़ा डर मैंने पार कर लिया हो।

दोपहर के भोजन में हमने फिर से उत्तराखंडी थाली ली – इस बार भट्ट की चूड़कानी, मंडुए की रोटी, और लोअर हिल्स के स्वाद।

शाम को हम अपनी कार में वापस दिल्ली के लिए रवाना हुए। रास्ते भर हम इस ट्रिप की यादों में खोए रहे – हँसी, डर, रोमांच, स्वाद और सुकून – सब कुछ इस यात्रा का हिस्सा बन गया।

यह यात्रा सिर्फ एक ट्रिप नहीं थी, यह आत्मा को ताज़गी देने वाला अनुभव था। गाड़ी चलाने का अपना रोमांच, उत्तराखंड के स्वाद, एडवेंचर की ऊँचाइयां और दोस्तों की संगत – इन तीन दिनों ने ज़िंदगी में कई यादें जोड़ दीं।

(लेखक एमएसएमई मंत्रालय में वैयक्तिक सहायक हैं)

अंग्रेजी – हिंदी

मंत्रालय की कुछ स्कीमें

स्कीम का नाम	हिन्दी रूपांतरण
Khadi Village Industries Development Scheme	खादी ग्रामोद्योग विकास योजना
Entrepreneurship and skill Development Programme	उद्यमिता और कौशल विकास कार्यक्रम
MSME- Trade Enablement and Marketing Initiative (MSME - Team Initiative)	एमएसएमई– व्यापार सक्षमता और विपणन पहल (एमएसएमई–टीम पहल)
Prime Minister Employment Generation Programme (PMEGP)	प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (पीएमईजीपी)
Credit Guarantee Trust Fund for Micro & Small Enterprises (CGTMSE)	सूक्ष्म और लघु उद्यमों के लिए ऋण गारंटी ट्रस्ट फंड (सीजीटीएमएसई)
Modified Market Development Assistance (MMDA)	संशोधित बाजार विकास सहायता (एमएमडीए)
Market Promotion & Development Scheme (MPDA)	बाजार संवर्धन एवं विकास स्कीम (एमपीडीए)
Scheme Of Fund for Regeneration Of Traditional Industries (SFURTI)	परंपरागत उद्योगों के पुनर्सृजन हेतु निधि स्कीम (स्फूर्ति)
A Scheme for Promoting Innovation, Rural Industry & Enterpreneurship (ASPIRE)	नवप्रवर्तन (इनोवेशन), ग्रामीण उद्योग और उद्यमिता संवर्धन स्कीम (एस्पायर)
Credit Linked Capital Subsidy for Technology Upgradation	प्रौद्योगिकी उन्नयन के लिए ऋण संबद्ध पूंजीगत सब्सिडी
Sub-Scheme MSE Green Investments and Financing for Transformation	परिवर्तन के लिए एमएसई हरित निवेश और वित्तपोषण उप–स्कीम
Trade Receivables Discounting System (TReDS)	व्यापार प्राप्य छूट प्रणाली (ट्रेड्स)
Micro and Small Enterprises Scheme for Promotion and Investment in Circular Economy (MSE-SPICE Scheme)	चक्रीय अर्थव्यवस्था में संवर्धन और निवेश हेतु एमएसई स्कीम (एमएसई– स्पाइस स्कीम)
National SC-ST HUB	राष्ट्रीय अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति हब
Raising and Accelerating MSME Performance (RAMP)	एमएसएमई कार्य–निष्पादन का उत्थान और गतिवर्धन (रैम्प)

काव्य-धारा

“निज भाषा उन्नति बिना,
कबहुं न ह्वैहैं सोय,
लाख उपाय अनेक यों
भले करे किन कोय।”

–भारतेन्दु हरिश्चंद्र

काव्य–धारा

ज़िंदगी

– रूपराशि

क़तरा क़तरा मिलती है
सुना था
किश्तों में बसर होती है
जिया है
हर महीनो का आग़ाज़ होता है
पहले सप्ताह में
दरमाहा का नाज़ होता है
फिर
फिसलती सी जाती है
ईएमआई पर ईएमआई
पकड़ में ही नहीं आती है!
पर फिर नया महीना आता है;
और
फिर किश्तों में बसर होती है!
सरकारी हो तो ट्रान्सफर के तामझाम
प्राइवेट तो नौकरी के जंजाल;
बड़ा शहर सोचने का वक्त नहीं देता
छोटे शहरों में वार्तालापों में
गुज़र होती है!
पर फिर भी
मुस्कुराहटों से जिए जाते हैं
ये मध्यमवर्गीय परिवार भी
अलग मिट्टी के बनाए जाते हैं!
क्यूँकि
जो क़तरा–क़तरा मिलती है
उसकी
किश्तों में बसर होती है!

(लेखिका केवीआईसी की मुख्य कार्यकारी अधिकारी हैं)

कुछ नज़र नहीं आता

– डॉ. शुभ्रांशु शेखर आचार्य

व्यक्ति चला तो जाता है इस संसार से
बस हमारे ज़हन से नहीं जाता।

तस्वीर में नज़र आने वाला इंसान
अब घर में नज़र नहीं आता।

घर का हर एक कोना–कोना आस में बैठा है
बस वह इंसान नज़र नहीं आता है।

जिन पौधों को सींचा था उसने बड़े ही प्यार से
अब बस वो बढ़ रहे हैं पर उनमें कोई फूल अब नज़र नहीं आता।

यादें दीवारों पर निशान कई छोड़ जाती हैं
लाख मिटाने से भी वो निशान नहीं जाता।

लोग तो बड़ी आसानी से कह देते हैं कि इंसान
कुछ लेकर नहीं जाता।

मुझसे पूछो हद उसकी यादों के अलावा उस घर
में मुझे कुछ नज़र नहीं आता।

(लेखक एनएसआईसी के सीएमडी हैं)

काव्य–धारा

मेरा चमकता सितारा

– विनम्र मिश्रा

बचपन में मां ने चटख अमावस रात में,
एक तारा दिखाया,
एम चमकता सितारा,
कहा जो कुछ भी चाहिए,
इससे ही मांग लेना, मिल जाएगा,
तबसे मेरी कामधेनु बन गया,
मेरा चमकता सितारा,

आईसक्रीम न मिल पाने पर
मीठी ठंडक देता,
मेरा चमकता सितारा,
गेंद खो जाने पर,
साक्षात गोल पिंड बन जाता,
मेरा चमकता सितारा,
दीवाली में पटाखे खत्म हो जाने पर,
झिलमिल फुलझड़ी बन जाता,
मेरा चमकता सितारा,

किताब के पन्नों के बोझिल पड़ने पर,
टिमटिम प्रदर्शनी बन जाता,
मेरा चमकता सितारा,
मेरी दादी मां के जाने के बाद,
उनका अपना घर बन गया,
मेरा चमकता सितारा,

सूनी आंखे जब किसी दोस्त को ढूंढती,
गलबैय्यां डाले बतियाने वाला साथी बन जाता,
मेरा चमकता सितारा

लेकिन आजकल रूठा–रूठा सा है,
मेरा चमकता सितारा,
विचलित मन गर भरोसा खोजता है, तो अब
मुंह बिचका लेता है,
मेरा चमकता सितारा,
आकुल हृदय अगर कभी ठहराव ढूंढता है,
तो अब आंखे तरेर देता है,
मेरा चमकता सितारा,

कब तक विमुख रहेगा मुझसे,
मेरा चमकता सितारा,
विचलित मन, व्याकुल हृदय की मनुहार,
कब तक टालता रहेगा,
मेरा चमकता सितारा,
आंखे मूंदे, बाहें पसारे, सांसे रोके खडा हूं,
सोचता हूं, मुझ तक क्या कभी वापस लौटेगा,
मेरा चमकता सितारा?

(लेखक एएमएसएमई मंत्रालय में निदेशक हैं)

काव्य–धारा

वो अनमोल पल क्या कभी लौटेंगे

– नीलम शर्मा

जब शांत मन से एकांत में बैठती हूँ,
तो धीमी बहती हवा
यादों की असीम गहराइयों में ले जाती है
और केवल एक ही सवाल पूछती है,
"वो अनमोल पल क्या कभी लौटेंगे"

वो बचपन की यादें,
वो यौवन की मस्ती,
वो अनमोल पल क्या कभी लौटेंगे।

अबोध बाला का रूठना, माँ का मनाना,
राजा के जैसे हर चाह का मनवाना,
पापा की ऊँगली पकड़, खेलना और खाना,
ना कोई चिंता, न कोई फ़िक्र, न शिकवा
नृप के जैसे इतराना और इठलाना

वो बचपन की यादें,
वो यौवन की मस्ती,
वो अनमोल पल क्या कभी लौटेंगे।

पापा का पाठशाला ले जाना,
मैडम का डर, पर दिल में इज्जत,
अक्षरों की बनावट में शिक्षिका का प्यार,
हृदय में विराजित उस देवी का मान,
वो छुट्टी की घंटी और
स्वछन्द तितलियों सा उड़ना।

वो बचपन की यादें,
वो यौवन की मस्ती
वो अनमोल पल क्या कभी लौटेंगे।

वो परीक्षा के दिन,
इतिहास, गणित, भूगोल सब गोलमाल,
रात्रि में परीक्षा स्वप्न का आना और डर जाना,
परीक्षा परिणाम और माँ–पापा का आशीष

वो बचपन की यादें,
वो यौवन की मस्ती,
वो अनमोल पल क्या कभी लौटेंगे।

वो कॉलेज में एडमिशन,
रंग–बिरंगी पोशाक में तितलियाँ,
वो जुलाई का माह, वो सावन की फुहार,
वो जून की गर्मी और दिसंबर की ठंडक
वो सखियों के साथ अल्हड़ मस्ती।

वो बचपन की यादें,
वो यौवन की मस्ती,
वो अनमोल पल क्या कभी लौटेंगे।

कहाँ खो गयी वो मासूमियत,
वो रूठना और माँ का मनाना,
कहाँ खो गयी अल्हड़ मस्ती,
वो स्वछन्द विचरण।
वो बचपन की यादें,
वो यौवन की मस्ती,
वो अनमोल पल न लौटेंगे, न लौटेंगे।

वो बचपन की यादें,
वो यौवन की मस्ती,
वो अनमोल पल न लौटेंगे, न लौटेंगे।।

(लेखिका एमएसएमई मंत्रालय में अवर सचिव हैं)

काव्य–धारा

मैं हूँ एमएसएमई

– डॉ. संदीप जोशी

मैं हूँ एमएसएमई–भारत की पहचान,
मुझे समझो, मैं हूँ नव निर्माण की जान।
माइक्रो से शुरू, पर सोच मेरी बड़ी,
हर नवाचार की हूँ मैं पहली कड़ी।
लघु हूँ मैं, पर मूल्य मेरा भारी,
हर जन की ज़रूरत, हर घर की सवारी।
''मध्यम'' हूँ मैं–रोज़गार का माध्यम बना,
जीविका से लेकर राष्ट्र–निर्माण तक चला।
एक दिन पूछा मुझसे एक आम इंसान–
"क्या करते हो मेरे लिए, बताओ पहचान?"
मैं मुस्कुराई, बोली स्नेह भरी बात,
"तेरे जीवन में हूँ मैं हर दिन, हर रात।
"तेरे भोजन में हूँ, तेरे घर के साज में भी,
तेरे ब्रश में बसती, तेरी चाय की चुस्की में भी।
तेरे अचार, दूध और कपड़ों की सिलाई,
मैं ही हूँ तेरी हर सुविधा की परछाई।
तेरे बाल कौन काटे, कमीज़ कौन प्रेस करे?
तेरा बर्तन कौन गढ़े, जिसमें हर दिन स्वाद चढ़े?
तेरा खाना, किराना, तेरा ऑनलाइन पैकेट,
मैं ही हूँ वह हाथ, जो भेजे हर बास्केट।
कृषि बिना मेरे अधूरी है–सपनों की खेती,
हर हल, हर बीज में बसी मेरी प्रीति।

मैं हूँ रीढ़ भारत की, अर्थव्यवस्था की शान, जीडीपी में भरता हूँ नवचेतना और जान।
रोज़गार बनाऊँ, आय में लाऊँ संतुलन,
निर्यात बढ़ाऊँ, उत्पाद में लाऊँ चलन।
रक्षा से लेकर ऊर्जा तक मेरा संबल,
परिवहन, ऑटो, हर क्षेत्र में मेरा अंश अटल।
मैं नवाचार का दीप जलाऊँ,
नई तकनीकें हर कोने में पहुँचाऊँ।
अब सुनो मेरी बात, समझो मेरी पहचान,
मैं हूँ विकास का आधार, न मानो मुझे मामूली जान।
संवर्द्धन दो मुझे, संसाधन और सम्मान,
मैं बनाऊँगा भारत को आत्मनिर्भर महान।
मैं बढ़ूँगा, तो बढ़ेगा देश का मान,
नई ऊँचाइयों तक पहुँचाऊंगा हिन्दुस्तान।

(लेखक एएमगिरी, वर्धा में वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी हैं)

काव्य–धारा

शब्द

– आर. भुवनेश्वरी

शब्द मीठे होते हैं
शब्द कड़वे भी होते हैं
शब्दों को चख–चख के बोलिए
हर शब्द में स्वाद होते हैं।

शब्द कोमल होते हैं
शब्द कठोर भी होते हैं
शब्दों को तोल–मोल कर बोलिए
क्योंकि हर शब्द मे वजन होता है।

शब्द तीर होते हैं, तो शब्द
मलहम भी होते हैं
शब्द अपनों को पराया तथा
परायों को अपना बना देते हैं।

शब्द घाव देते हैं
शब्द औषधि भी होते हैं
शब्दों में इस प्रकार की जान होती है
कि बेजान में जान फूंक देते हैं।

शब्द हरा सकते हैं
शब्द जिता भी सकते हैं
इतिहास गवाह है, सोचे–समझे
विनम्रता से कहे शब्दों से,
दुश्मन भी हमारे दोस्त बन जाते हैं।

शब्द हमारे संग चलते हैं, हमारी परछाई हैं
कहे हुए हमारे हर शब्द
पूजा बनकर हमारे आशीर्वाद बन जाते हैं।

(लेखिका एमएसएमई मंत्रालय की पूर्व प्रधान स्टाफ अधिकारी हैं)

प्रकृति

– अनुराधा कृष्णास्वामी

पेड़ हैं हरे, फूल हैं रंगीले,
नदी का पानी, साफ और ठंडे।
धरती देती अन्न हमारा,
सागर देता मोती सारा।
प्रकृति प्यारी, सबसे न्यारी,
इसकी रक्षा हमारी जिम्मेदारी।

(लेखक एएमएसएमई मंत्रालय में प्रधान निजी सचिव हैं)

काव्य–धारा

इन्सानियत

– अनुपमा परमार

रो रही हर आंख है, जल रहा है देश अब,
फिर पड़ा तू सो रहा है, देख अब तो देख अब,
मां का सीना देख अपनी, खून से अब लाल है,
आदमी ही देश में अब आदमी का काल है,
मारकर इन्सान को ऐसे इन्सान तू क्या पाएगा?
मर्म–धर्म का जानकर दुष्कर्म को झुठलाएगा?
इन्सानियत का खून करना धर्म का अपमान है,
तू जान इसको, मान इसको, तू मर्म से अनजान है,
जिंदगी मिलती नहीं हर बार जीने के लिए,
इन्सां तेरा प्यार बहुत है, हर जख्म सीने के लिए।

(लेखिका एमएसएमई मंत्रालय की पूर्व उप–निदेशक हैं)

आदमी

– गरिमा सिंह

कल देखा था मैंने उसे,
बदहवास चलते हुए,
अपने ही अक्श से लड़ते हुए।
कल फिर देखा मैंने उसे,
मज़बूरी में पिसते हुए,
ज़िंदगी तलाशते हुए।
कल फिर देखा मैंने उसे,
रास्ते में खड़े,
ज़िंदगी से मुठभेड़ करते हुए।
आज मैंने उसे देखा फिर,
सपनों के महल बुनते हुए,
आशाओं के दीप जलाते हुए,
ज़िंदगी के नए मायने तलाशते हुए।

(लेखिका एमएसएमई मंत्रालय में वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी हैं)

काव्य–धारा

मेरे बाबूजी, एक कत्तिन

– विजय कुमार रात्रे

जब कभी स्कूल से आने के बाद मैं बैठता हूँ,
अपने बाबूजी के नज़दीक, कभी उनकी गोद पर,
कभी चढ़ता हूँ उनकी पीठ पर, या
जब कभी उनके कहने पर दबाता हूँ उनके पैरों को,
उनकी पीठ पर अपने नरम हाथों से खुजली करता हूँ,
तब–तब आती है एक अजीब सी गंध,
मेरे बाबूजी की देह से, उनके हाथों से, उनके पैरों से,
उनके कुर्ते और उनकी धोती से,
और उनके खीसे से निकले चार–आठ आनो के सिक्कों से भी,
एक अजीब चिर–परिचित सी गंध,
कुछ भीनी सी, कुछ मटमैली सी,
नरमा के फूल, पौधों और बीजों सी,
नई नहीं हैं यह, बरसों पुरानी सी,
सूत और पोनी से निकली हुई कच्ची सी गंध।

यह पोनी और कपास की गंध मेरे पूरे घर में भी है,
आंगन में, चबूतरे में, बैठक में, सब जगह,
वहीं अजीब बेनाम सीलनदार–सी पोनी की गंध,

जो हमेशा उठती है, बाबूजी की देह से, कपड़े से,
उनके चरखे से, कंधे पर डाले उनके गमछे से, घर के सामानों से,
चरखे की चाक से, करघे के खींचे तानो– बानों से,
घर के कोनों में पड़े सूत की गड्डियों, पोनी की ढेरों से,
परत दर परत, उंगलियों से गुरमेटती हुई एक अनूकुल सी गंध,
हमेशा आती है, कपास ओर पोनी से निकली हुई कच्ची सी गंध...
क्योंकि मेरे बाबूजी एक कत्तिन हैं।

(लेखक केवीआईसी, मुंबई में सहायक निदेशक हैं)

काव्य–धारा

माँ

– यतीन्द्र कुमार

माँ,
तुम्हें कुछ कम माँ होना चाहिये था,

ताकि
तुम्हारे हिस्से आ पाता,
थोड़ा कम काम,
थोड़ी कम थकान,
थोड़ी कम मेहनत,
और थोड़ी अधिक चैन की नींद,
थोड़ा लम्बा वसंत,
और सबसे महत्त्वपूर्ण,
जरा देर से बुढ़ापा।
परंतु, तुम भी बड़ी जिद्दी हो, बहुत मेहनतकश हो माँ,
और, इसी वजह से तुमने हर बार चुना,
अपनी क्षमता से,
कहीं अधिक माँ होना,
हमको सूखे में सुला के खुद गीले में सोना,
हमको आराम से सुलाने के लिये खुद कई रातों को जगना,
हमारी खुशी में खुद की खुशी की तलाश करना।
तुमने सब परिस्थिति के साथ समझौता किया,
बिना ये देखे, बिना ये सोचे, उस परिस्थिति के परिणाम की परवाह किये बिना,
परंतु,
अब, धीरे–धीरे पता लगने लगा है
कि माँ के वे मजबूत कंधे अब थकने लगे हैं, हाथ अब कांपने लगे हैं
चेहरा जो एकदम सफेद था, अब सांवला पड़ने लगा है,
और उस पर भी गहरी झुर्रियां दिखने लगी हैं,
माथे की लकीरें अब गहरी होने लगी हैं।

अब, जब बैठता हूँ माँ के पास चैन से,
तो उसका हाव–भाव, उसका संघर्ष बताते हैं।

लेकिन,
फिर भी, वो हर वक्त दिलासा देती है
कि वह एकदम ठीक है,
उम्र और वक्त का असर वो अपने ऊपर
आने नहीं देती है।

फिर, कभी–कभार नजरें चुरा के देखता हूँ उनको अकेलेपन में,
जब वो एकांत में खड़े होकर,
एक ही मुद्रा में शांत, चिंतन करती है।
ऐसा लगता है कि इस उम्र में भी वो थकी नहीं है,
ना ही उसका दिल भरा है,
उम्र जरूर ढ़ल रही है,
पर आत्मा में ऊर्जा पहले से कहीं अधिक है।
इन सभी बातों और चीजों को महसूस करते–करते,
कलेजा फटने को आता हैं,
फिर, मन ही मन कहता हूँ,
सच में माँ, तुम बहुत मेहनतकश निकलीं,
और उससे भी अधिक, तुम बहुत जिद्दी निकली।।

(लेखक केवीआईसी, बाड़मेर में कार्यकारी हैं)

काव्य–धारा

मदर्स डे

– मधु

मदर्स डे की सुबह, मेरी बेटी ने सुंदर कार्ड थमाया।
बोली प्यार से यूं मां, खास आपके लिये बनाया।
देख नन्ही कलाकारी, मेरा मन हर्षाया।
उसमें उड़ेला प्यार देख, मेरा मन भर आया।
उसी लम्हा, अपनी माँ का चेहरा याद आया।
मदर्स डे को जानने को उनको फोन घुमाया ।
पूछा माँ, क्या आपने भी कभी मदर्स डे मनाया?
हंस के बोली मेरी मां, कहाँ था तब ऐसा जमाना ।
मदर्स डे मनाने की किसको फुरसत थी।
एक को पाला, एक को जन्मा, यूं ही जिंदगी चलती थी।
मदर्स डे, चिल्ड्रन डे आजकल के हैं चोंचले,
देखने को सही मायने प्यार के, झांको चिड़ियों के घोसले।
क्या हुआ तन है छोटा, पर बड़े हैं हौसले ।
उनका हर दिन लेबर डे, हर रात मदर्स डे होती है।
दूर–दूर से तिनके लाकर अपना आशियाँ संजोती है।
दाना–दाना मुंह में डाल, बच्चों का पेट भरती है
फिर और भोजन की तलाश में, नई उड़ानें भरती है।
शाम से पहले घर को लौटे, यूं फर्ज अदा करती है।
कोई डे मनाना हो, तो छोड़ो बेकार के ताम–झाम ।
अपना समय और धन लगाओ, कोई दरियादिल, नेक काम।
मदर्स डे को ढंकिये किसी निर्धन माँ का तन ।
चिल्ड्रंस डे मनाओ, देकर भूखे बच्चों को अन्न ।
ऐसे करके आप करेंगे, एक पंथ दो काज।
आपका मन भी रह जायेगा,सुखी बनेगा समाज।

(लेखिका एमएसएमई मंत्रालय में प्रधान निजी सचिव हैं)

आशा

– मुकेश कुमार

सूरज हर दिन आता है,
लेकर किरण नई।
रात घनेरी छट जाती,
जब आशा की लौ जली।
छोटे से बीज में भी तो,
जीवन का स्पंदन है।
मिट्टी में मिल कर भी वो,
बनता नया उपवन है।
गिरकर उठना, चलना फिर,
यही तो है जीवन की रीत।
मन में रखना दृढ़ विश्वास,
मिलेगी तुम्हें अपनी जीत ।
नदिया बहती सागर को,
राहें चाहे हो अंजान।
मंज़िल तक वो पहुँचेगी,
जो रखता है अटल उड़ान ।
थमना नहीं, थकना नहीं,
ये वक्त भी गुजर जाएगा।
हर मुश्किल के पार ही तो,
एक नया सवेरा आएगा।

(लेखक खादी और ग्रामोद्योग, अंबाला कैंट में कार्यकारी हैं)

काव्य–धारा

प्रश्न का उत्तर

– राजीव रंजन

कौन हो तुम ?

मैंने पूछा, कौन हो तुम ?
बोलो! बोलो क्यूँ मौन हो तुम ?
डर रहे भला तुम किस से आज
जरा कहो, हैं कैसे तेरे मिजाज
क्यूँ दुबक कर तुम खड़े हुए हो
कौन है जिससे तुम डरे हुए हो
है कौन तुम्हें धमकाता सो कहो
भावनाओं में अब तुम यूँ न बहो
जो कही न तुमने अपनी बात
न बदल पाओगे अपने हालात
अब छोड़ो इन सारी बातों को
आने दो अपने जज्बातों को
बस कहो तो पहले कौन हो तुम
हो कबसे चुप और कहाँ हो गुम ।।

मैं प्रश्न हूँ!

मैं प्रश्न हूँ! कहो क्यूँ चौंक गए ?
कहे पे कहा, कहाँ तेरे शौक गए ?
है मुझी से पूछता तू है कौन ?
प्रश्न से करता प्रश्न, है क्यूं मौन?
मैं न मौन हूं न कभी मौन था
अब गौण हूं न तब गौण था
मैं हर जगह बिखरा हुआ हूं
पर हर जगह ठहरा हुआ हूं
दुबका हुआ न डरा हुआ मैं
न जज्बातों से भरा हुआ मैं
शांति भी मैं और क्रांति भी मैं
यथार्थ भी मैं और भ्रान्ति भी
हर उन्माद का कारण भी मैं हूं
और उनका निवारण भी मैं हूं ।।

मत खोज मुझे !

मत खोज मुझे, मैं सर्वत्र हूं।
तू पूज मुझे, मैं पवित्र हूं।
मैं नचिकेता का मित्र बना
मैं हीं गीता का निमित्त बना
नरसिंह का आवाहक मैं हूं
उपनिषद् तो मैं ही मैं हूँ जो
मुझे खोजने निकले वीर
बने गये वो बुद्ध औ महावीर
भक्ति का भ्रम मत पालो तुम

करो प्रश्न, फिर सब पा लो तुम
प्रहलाद की भक्ति निष्फल जाती
जो पिता की जिह्वा पे मैं न धाती
कृष्ण के दिखे जो विराट रूप
मैं पार्थ बना कभी धृतराष्ट्र पुत्र
न्यूटन के लिए, सुनो, मैं सेब बना
हैं मूर्ख सभी जिसने मुझे न चुना ।।

एक आवाज़ और !

एक आवाज़ और आई ! मैं उत्तर हूँ।
प्रश्न का उत्तरवर्ती हूं, मैं उत्तर हूं!
सुनो ! आज मुझे सब पूजते हैं
सच ! आज मुझे हीं सब ढूंढते हैं
मैं तो हूं बस प्रश्र की छाया
बिन प्रश्न मुझे किसने पाया ?
बिन प्रश्न मेरा अस्तित्व कहीं है ?
पर कोई इसको मानता नहीं है
सुन उत्तर को मैं निरुत्तर था
मेरे प्रश्न का यही तो उत्तर था
प्रश्न जीवन को अर्थ है देता
उत्तर तो श्रेय व्यर्थ है लेता
गर प्रश्न अर्जुन ने किए ना होते
फिर कृष्ण गीता क्योंकर कह पाते ।।

किए जिसने प्रश्न !

किए जिसने प्रश्न ! जीवन वो अहा ।
बिन प्रश्न जो जीवन, नदियों में बहा ।
पर प्रश्न को कहां कोई पूछता है
उत्तर को ही तो बस पूजता है
दुनिया तो कृष्ण भक्ति में डूबी
भूली अर्जुन के प्रश्न की खूबी
जानो ये दुनिया किस से है डरती
उससे, उनसे जो प्रश्न है करती
उन्हीं से बस खतरा रहता है
जो पीता जहर या सूली चढ़ता है
प्रश्न तो जीवन का प्रमाण है
बिन उसके जीवन, मृत्यु समान है
प्रश्न का अर्थ कुछ और न जान
जो कर सके प्रश्न बस वही महान् ।।

(लेखक एएमएसएमई मंत्रालय में सहायक अनुभाग अधिकारी हैं)

काव्य–धारा

कोख में

– बीनू सिंह

कल मुलाकात हुई थी उन बूँदों से,
बह निकली थी जो बच्ची की आँखों से
करना चाहती थीं गगन में कीर्तन,
रखना चाहती थी उम्मीदों की किरण।
सोना चाहती थी उजाला बनकर,
चहकना चाहती थी धरा पर रहकर
खिलना चाहती थी फूल बनकर,
महकना चाहती थी सुगंध बनकर।
लोटना चाहती थी आँगन की मिट्टी में,
खेलना चाहती थी पत्थर की गिट्टी से
रहना चाहती थी माँ के आँचल में,
बहना चाहती थी माँ सी निर्मल गंगा में।
छूना चाहती थी आकाश की ऊँचाइयों को,
खोजना चाहती थी सागर की गहराइयों को
जाना चाहती थी सागर पार,
पाना चाहती थी सफलता अपार।
कहना चाहती थी मुझे स्वीकार करो,
माँ की कोख में मुझ पर न कोई वार करो
और उन आँसुओं की थी बस यही पुकार
बहुत सरल है पेट में,मुझ पर करना वार
है हिम्मत तो ऐ माँ, मुझको पैदा करके मार।

(लेखक एएमएसएमई मंत्रालय की पूर्व प्रधान निजी सचिव हैं)

पाकीज़ा

– माधवी मनोरम

तेरी तस्वीरों में अपना वजूद देखती हूं
अब खुद को पहले से बेहतर मौजूद देखती हूं
मुस्कानें पहले भी बिखरती थी चेहरे पर मेरे
अधरों पर तेरे इश्क की मिठास अब कुछ और देखती हूं

रिश्ता गहराइयों से बनता जिसमें परवान देखती हूं
अपने एहतराम में तेरे पाकीज़ा मोहब्बत–ए–इजहार देखती हूं
दिल को सुकून से भर दे जो वादे तेरे
तबीयत में अपनी वो रौनक–ए–गुमान देखती हूं

तस्बीह तेरे प्यार में करते, सजदे कर उस आसमान को देखती हूं
खुदाई इस जहां में और मेरे हिस्से तेरी नवाजिशें देखती हूं
रास्तों में अब मंजिल कौन पूछे
तेरा नाम पाक–ए–नमाज और उनके कलमों में देखती हूं।

एहतराम= सम्मान करना, ध्यान देना
परवान= विकसित होना
तस्बीह– फूलों की माला
नवाजिश= रहम, करम, दयालुता

(लेखिका एमएसएमई मंत्रालय में परामर्शदाता हैं)

काव्य–धारा

हम हैं ऑफिस के सिपाही

– दीपक शर्मा

ये ऑफिस सिर्फ एक इमारत नहीं,
यहाँ हर दिल एक कहानी है।
जो भी यहाँ से गुजरता है,
कुछ सीख ले जाता, ये निशानी है।।

ना थकते हैं, न रुकते हैं,
डेडलाइन से कभी ना झुकती नजर।
मिशन हो या विजन हो,
हर लक्ष्य को किया है असर।।

कभी मुस्करा के हल निकाले, कभी डाँट में समझाया,
टीम बनाकर काम किया, हर मंजिल तक पहुँचाया।
कभी प्रोजेक्टर की परछाई में, कभी मीटिंग के दौर में,
नाम हमारा उजालों में, न कभी अंधेरे की ओर में।।

तो आइए मिलकर एक नई कहानी लिखें,
नई उड़ान भर के दिखाएँ
हम हैं ऑफिस के वीर सिपाही,
जो हर एक चुनौती को गीत बनाएँ।

(लेखक एमएसएमई मंत्रालय में आशुलिपिक हैं)

पर्यावरण की पुकार

– मोहम्मद आरिफ

धरती माँ का रूप है प्यारा,
हरियाली से भरा नज़ारा।

नीला अम्बर, शीतल बयार,
प्रकृति कहे– हमें न संहार।

नदियाँ गाएँ जीवन का गीत,
पेड़ करें हर दिन नव प्रीत।

संभालो इसको, यही आधार,
पर्यावरण है जीवन–धार।

(लेखक एएमएसएमई मंत्रालय में डीईओ हैं)

कुछ उपयोगी लैटिन शब्द

लैटिन शब्द	हिंदी अर्थ
Ad-hoc	तदर्थ
Ad infinitum	अनंत तक / बिना अंत के
Ad interim	अंतरिम रूप से / अस्थायी तौर पर
Ante	पूर्व / पहले
De facto	व्यवहार में / वस्तुतः
De jure	विधिक रूप से / कानूनी तौर पर
Et cetera (etc.)	आदि / इत्यादि
In toto	पूर्णतः / संपूर्ण रूप से
Inter alia	अन्य बातों के अलावा / प्रमुखतः
Mutatis mutandis	आवश्यक संशोधनों के साथ / यथोचित परिवर्तन करके
Per se	स्वयं में / अपने आप में
Pro rata	आनुपातिक रूप से
Quorum	गणपूर्ति
Status quo	यथास्थिति
Vice versa	विपरीत क्रम में / विलोमतः
Via	द्वारा / मार्ग से / माध्यम से

विविध

“हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है।”

–कमलापति त्रिपाठी

अच्छी हिंदी

शुद्ध–अशुद्ध

– प्रस्तुतिः आलोक कुमार

बातचीत और लेखन में कई बार कई अशुद्ध शब्दों का प्रयोग इतने धड़ल्ले से हो रहा है कि वही शब्द मानक लगने लगा है, जबकि वह व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध है। इस प्रस्तुति में ऐसे ही कुछ शब्दों पर रोशनी डाली गई है और तर्कसहित समझाने की कोशिश की गई है कि क्यों कोई शब्द ग़लत है और कोई सही।

1. ''महत्व'' नहीं, ''महत्त्व''

भाववाचक रूप बनाते समय कई शब्दों में आधा त (त्) और 'व' आता है, जैसे–नारीत्व, ममत्व, स्थायित्व। इसी पैटर्न पर महत्व लिखने का चलन बढ़ा है। लेकिनः

महत्त्व का संधि–विच्छेद करें, तो यह बनेगाः

महत्+त्व

इसमें त्व प्रत्यय (post-position) है।

दो आधे 'त्' के मिलने से बनने वाला शब्द 'त्त्' ही हो सकता है। इसलिए, सही शब्द है महत्त्व, न कि महत्व।

इसी प्रकार, सही शब्द ''तत्त्व'' और ''सत्त्व'' हैं, न कि ''तत्व'' और ''सत्व''।

2. ''छठवां'' नहीं, ''छठा''

संस्कृत के पंचम से पांचवा और सप्तम से सातवां शब्द बनते हैं।

इन संख्यासूचक संस्कृत शब्दों के अंत में 'म' आता है। यही 'म' हिंदी में 'वां' में बदलता है। गौर करें कि 'म' होठों से बोला जाता है। इसी प्रकार, 'व' बोलते हुए भी दांत और होठों का प्रयोग होता है। 'म' और 'वां' दोनों में नासिका की ध्वनि आती है। इस साम्यता के कारण 'म', 'वां' में बदलता है।

संस्कृत में छठे के लिए मूल शब्द षष्ठम नहीं, बल्कि षष्ठ है। इसलिए, मूल शब्द के अंत में 'म' नहीं होने के कारण शब्द छठा बनेगा, न कि छठवां।

3. ''छः'' नहीं, ''छह''

संस्कृत शब्द षट् को पालि–प्राकृत में 'छ' और हिंदी में छह कहा जाता है। 'छ' के साथ 'ह' बोलते समय विसर्ग जैसा (छः) ही उच्चारण होता है, इसलिए छह को छः लिखने का चलन हुआ है। किंतु, हिंदी में विसर्ग होता ही नहीं। हिंदी में जिन विसर्गयुक्त शब्दों का प्रयोग होता है (प्रातः, प्रायः, अतः), वे सब संस्कृत से ज्यों के त्यों लिए गए हैं।

दूसरी बात, हिंदी के अन्य संख्यावाचक शब्दों के बहुवचन दोनों, तीनों, चारों आदि बनते हैं। किंतु, यदि छह को छः लिखा जाए, तो बहुवचन बनाने के लिए छःओं लिखना होगा,जो हास्यास्पद होगा, जबकि छह को छहों आसानी से बनाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, ग्यारह, बारह, तेरह आदि जैसे संख्यावाचक शब्दों में भी किसी का प्रयोग विसर्ग लगाकर नहीं होता।

4. ''श्रंखला'' और ''शृंखला''

श्+र=श्र (जैसे–श्रद्धा, श्रेणी आदि)

श्+ऋ (स्वर)=शृ (शृंखला, शृंगार आदि)

शृंखला में व्यंजन(र) और स्वर(ऋ) –दोनों जुड़े हुए हैं जबकि स्वर और व्यंजन में से कोई एक ही जोड़ा जा सकता है। इसलिए, श्रृ लिखना ही ग़लत है।

सही होगा–शृंखला।

5. ''स्रोत'' नहीं, ''स्रोत''

स्रु धातु का अर्थ होता है–बहना या रिसना, इसलिए रक्तस्राव शब्द बना।

स्रोत का अर्थ है–जलप्रवाह, जल की धारा या नदी।

सोता शब्द इसी से बना है जिसका अर्थ है–बहना।

स्रोत का एक अर्थ मूल प्राप्ति स्थान भी होता है। इसलिए, हम कहते हैं– आय का स्रोत।

ऐसे बहुत–से शब्द हैं जिनमें आधे 'स्' के बाद 'त्र' आता है, जैसे–अस्त्र, शस्त्र, वस्त्र, स्त्री, शास्त्र आदि। इसलिए, आधा 'स्' देखने पर 'त्र' के लिए भूलवश स्त्रोत लिखा जाता है। जबकि ऐसे भी कई शब्द हैं, जिनमें आधे 'स्' के बाद 'र' आता है, जैसे– अजस्र, मिस्र, स्राव। लेकिन ऐसे शब्द थोड़े–से हैं, इसलिए गलती से हम स्रोत की जगह स्त्रोत लिखते हैं। सही शब्द है–स्रोत।

6. ''स्त्रोत'' नहीं, ''स्तोत्र''

स्तु धातु का अर्थ है–प्रशंसा या वंदना करना।

पद्यात्मक श्लोक या देवी देवता का प्रशस्ति गायन स्तोत्र है। जैसे स्तुति में भी पहले 'त' आएगा। स्तुति से जुड़े ऐसे ही अन्य शब्द हैं–स्तवन, स्तुत्य आदि।

7. ''श्रीमति'' नहीं, ''श्रीमती''

श्री का अर्थ है–लक्ष्मी, शोभा, वैभव, महिमा, ऐश्वर्य।

मति का अर्थ है–बुद्धि

श्रीमति का अर्थ हुआ–शोभायुक्त बुद्धिवाली।

''श्री'' में मतुप् प्रत्यय लगने पर स्त्रीलिंग शब्द होने पर शेष रहता है वती या मती। इसी प्रकार, पुल्लिग शब्द रहने पर वान या मान बनता है, जैसे–धनवान, आयुष्मान।

मती या वती का अर्थ है–युक्त होना।

इस प्रकार, ''श्रीमती'' शब्द सही है क्योंकि इसका अर्थ हुआ–धन/वैभव से युक्त होना।

8. ''आध्यात्म'' नहीं, ''अध्यात्म''

अध्यात्म शब्द का संधि–विच्छेद करने पर मिलेगा–अधि+आत्म।

अधि का अर्थ है–श्रेष्ठ या अधिक। इसलिए अधिक कार्य करने वाला अधिकारी हुआ।

आत्म का अर्थ है–स्वयं।

इस प्रकार, अध्यात्म का अर्थ हुआ–अपने से उच्चतर सत्ता से जुड़ने का प्रयास।

यण संधि का नियम कहता है कि यदि पहले शब्द के अंत में 'इ' हो और उसके बाद दूसरे शब्द के शुरु में 'इ' के अलावा कोई भी स्वर हो तो 'इ' आधे 'य्' में बदल जाता है। इस प्रकार, अध्+य्+आत्म की संधि से शब्द बनेगा– अध्यात्म क्योंकि उपसर्ग ''अधि'' था न कि ''आधि''।

किंतु, अध्यात्म शब्द बनने के बाद जब इक प्रत्यय लगता है, तो 'अ' 'आ' में बदल जाता है। इस प्रकार, शब्द बनेगा–आध्यात्मिक। सामाजिक भी इसी प्रकार बना है।

इस प्रकार सही शब्द हैं– ''अध्यात्म'' और ''आध्यात्मिक''।

9. ''निरोग'' नहीं, ''नीरोग''

यह नीरोग है– नीरस, नीरज या नीरद की तरह। संधि विच्छेद निः+रोग= नीरोग, इसमें व्याकरण के नियमानुसार विसर्ग का लोप हो गया और अगला वर्ण दीर्घ हो गया। नीरोग का अर्थ है, रोग रहित।

10. ''उज्वल'' नहीं, ''उज्ज्वल''

संधि विच्छेद उत्+ज्वल = उज्ज्वल। व्यंजन संधि के नियम के अनुसार, जब 'त्' के बाद 'ज' आता है, तो 'त' का 'ज' हो जाता है, जिससे 'उत्' का 'त्' 'ज्वल' के 'ज' के प्रभाव से आधा 'ज्' बन जाता है और 'ज्ज्' बनता है, इस प्रकार उज्ज्वल बन जाता है। 'उत्' उपसर्ग का अर्थ 'ऊपर' या 'श्रेष्ठ' है और 'ज्वल' का अर्थ चमकना है, इसलिए 'उज्ज्वल' का अर्थ 'ऊपर से प्रकाशमान' या 'चमकदार' होता है।

11. ''दवाईयां'' नहीं, ''दवाइयां''

दीर्घ ईकार वाले शब्द जब बहुवचन बनते हैं, तो दीर्घ 'ई' ह्रस्व 'इ' में परिवर्तित हो जाता है। इसलिए, दवाई का बहुवचन दवाइयां होगा। रजाइयां, कलाइयां, जम्हाइयां आदि भी इसी प्रकार बने शब्द हैं।

(प्रस्तुतकर्ता एमएसएमई मंत्रालय में सहायक निदेशक हैं)

क्रासवर्ड

वर्ग पहेली–1

प्रिय पाठकगण,

वर्ग पहेली हर उम्र के लोग खेलते देखे जाते हैं। हिंदी शब्दों के प्रति रुचि जगाने के लिए हम भी पहले ही अंक से इसकी शुरुआत कर रहे हैं। आप अपनी शब्द– संपदा को खंगालें और इसे हल करने का प्रयास करें और अपने उत्तर हमारे ई–मेल msmehindi@gmail.com पर 31 मार्च, 2026 तक भेज दें। विजेताओं/सर्वश्रेष्ठ प्रयास करने वालों के नाम अगले अंक में प्रकाशित किए जाएंगे।

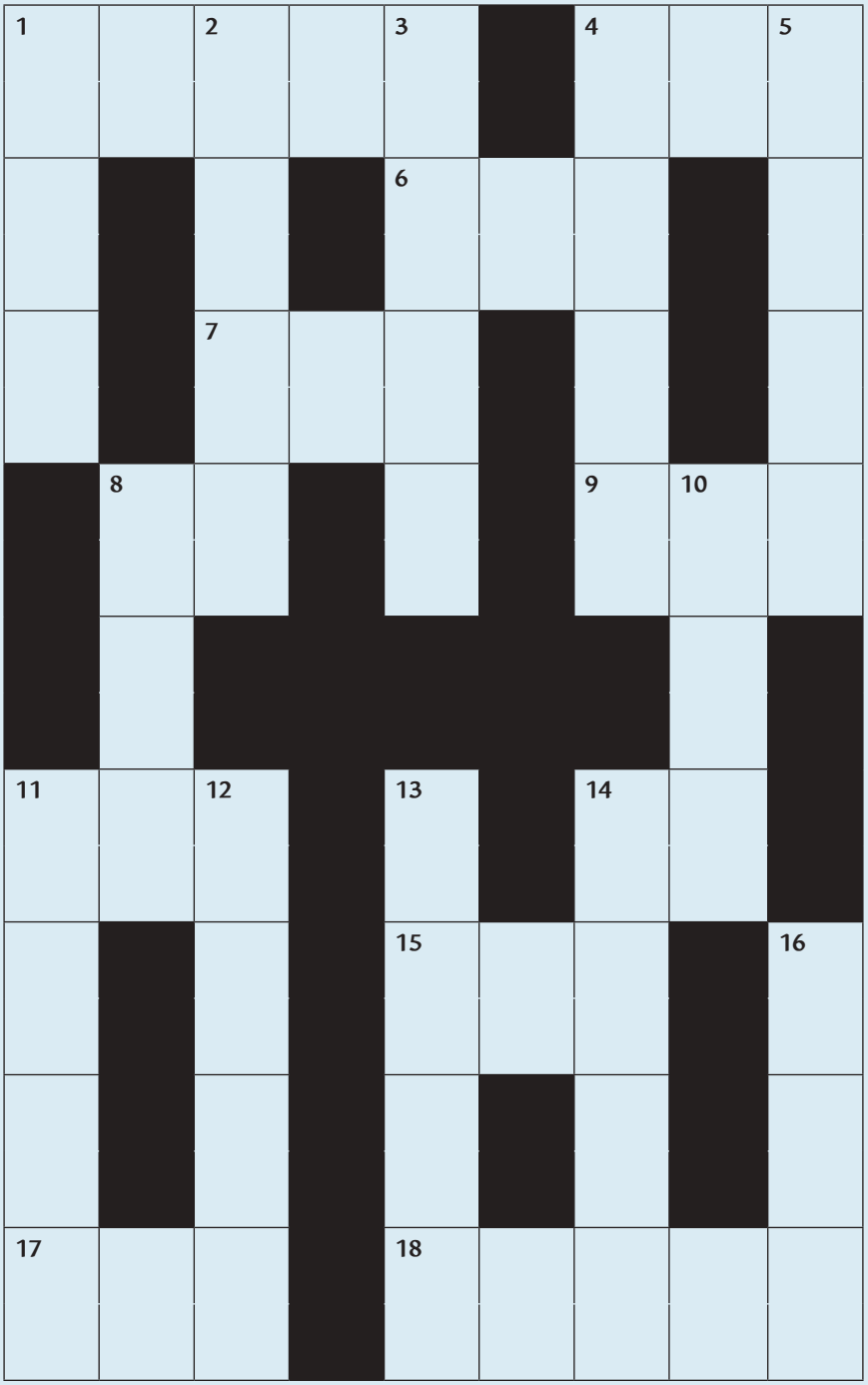

संकेतः

बाएं से दाएं :

1. शादी समारोह
4. सफेद, चमकदार, आभायुक्त, सुंदर
6. प्रेमिका के प्रेमियों में से कोई एक, प्रतिद्वंद्वी
7. मांगनेवाला
8. पार्वती
9. आविष्कार
11. इस्तेमाल, उपयोग
14. प्रत्येक, शिव
15. अविवाहिता
17. अदब, शिष्टाचार
18. आक्षेप करना, व्यंग्य करना

ऊपर से नीचेः

1. स्वर्धम विरुद्ध, धर्मभ्रष्ट, परधर्म अनुयायी
2. सावधानी, चालाकी
3. दूल्हा–दुल्हन
4. वमन, कै, उल्टी करने की इच्छा
5. शर्मनाक
8. इज्ज़त, शान, प्रतिष्ठा, महिमा
10. ज़मींदारी, भूमि स्वामित्व, मिल्कियत, ज़मीन
11. सेवा में लगा हुआ
12. नशा करने वाला
13. बेचैनी
14. हरियाली
16. सापेक्ष, की बनिस्पत

कुमार राधारमण
(प्रस्तुतकर्त्ता एमएसएमई मंत्रालय में उप–निदेशक हैं)

बूझो तो जानें

पहेलियां

— मोहम्मद आरिफ

1. हर कागज़ पर करूं बसर,
   नाम मगर न आए नज़र
2. बटन दबाने पर हूं जगता,
   काम बीच भी हूं सो जाता
3. हर कोई मुझसे खुश नहीं होता,
   पर कोई मुझसे बच नहीं सकता।
4. बोलूं ना, बस लिखूं बात
   मीटिंग में दूं सबका साथ
5. चलूं नहीं, फिर भी हूं गिनता
   मुझसे ही है वेतन मिलता।

(लेखक एमएसएमई मंत्रालय में डीईओ हैं)

पहेली उत्तर:—

1. वाटरमार्क
2. कंप्यूटर
3. कर कटौती
4. नोटबुक
5. उपस्थिति

“ हिन्दी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का एक बहुत सरल स्रोत है।”

- सुमित्रानंदन पंत

" हिन्दी भाषा का महत्व उसकी सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय एकता में है। "

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय, कर्त्तव्य भवन-03,
कर्त्तव्य पथ, नई दिल्ली-110001